चन्दामामा
जुलाई १९९६
Rs
6

कभी न हम भूलें जी... जीते जी

जीने की राह यही है सही

जीवन की इन राहों में हर कदम है इम्तिहान, किन राहों को अपनाएंगे, किन से मुंह मोड़ेंगे, यही हमारी पहचान. बिना चाह के, बिना आस के, किसी का हाथ बंटाना, यूं ही राह चलते, किसी के काम आना. इसी को कहते सच्चाई से जीना. कभी न हम भूलें जी . . . जीते-जी, जीने की राह यही है सही.

बरसों से भारत के सबसे ज्यादा चाहे जानेवाले बिस्किट.

• स्वाद भरे, सच्ची शक्ति भरे •

everest/95/PPL/110hn

भारत में सर्वाधिक बिकने वाले कॉमिक्स
डायमण्ड कॉमिक्स
प्राण रमन हा! हा!!
प्राण बिल्लू का स्कूल
प्राण चाचा चौधरी टोकियो में
मौत का तूफान (डायनामाइट सीरीज)
प्राण रमन की मुर्गी
ताऊजी और नीला शैतान
प्राण पिंकी का बगीचा
महाबली शाका और पिरामिड
डायमण्ड कॉमिक्स डाइजेस्ट प्राण चाचा चौधरी और डायनासोर
मोटू छोटू और रहस्यमय महल
डायमण्ड कॉमिक्स डाइजेस्ट फैण्टम-56
मैण्ड्रेक-43
जेम्स बाण्ड-46
अंकुर बाल बुक क्लब के सदस्य बनें और बचायें रु. 200/- वार्षिक
अंकुर बाल बुक क्लब घर बैठे डायमण्ड कॉमिक्स पाने का सबसे सरल तरीका है। आप गांव में हैं या ऐसी जगह जहाँ डायमण्ड कॉमिक्स नहीं पहुंच पाते। डाक द्वारा वी.पी.पी. से हर माह डायमण्ड कॉमिक्स के 6 नये कॉमिक्स पायें और मनोरंजन की दुनिया में खो जायें,साथ ही ढेरों इनाम पायें।
हर माह छः कॉमिक्स (48/- रु. की) एक साथ मंगवाने पर 4/- रुपये की विशेष छूट व डाक व्यय फ्री (लगभग 7/-) लगातार 12 वी.पी. छुड़ाने पर 13वीं वी.पी. फ्री।
1 वर्ष में महीने — बचत (रु.) — कुल बचत (रु.)
12 — 4/- (छूट) — 48.00
12 — 7/- (डाक व्यय) — 84.00
1 — 48/- (13वीं वी.पी. फ्री) — 48.00
सदस्यता प्रमाण पत्र व अन्य आकर्षक 'उपहार', स्टिकर और 'डायमण्ड पुस्तक समाचार' फ्री — 20.00
200.00
सदस्य बनने के लिए आप केवल संलग्न कूपन को भरकर भेजें और सदस्यता शुल्क के 10 रु. डाक टिकट या मनीआर्डर के रूप में अवश्य भेजें। इस योजना के अन्तर्गत हर माह 20 तारीख को आपको वी.पी. भेजी जायेगी जिसमें छः कॉमिक्स होंगी।
हाँ! मैं "अंकुर बाल बुक क्लब" का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूं और आपके द्वारा दी गई सुविधाओं को प्राप्त करना चाहता/चाहती हूं। मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूं।
नाम
पता
डाक जिला पिनकोड
सदस्यता शुल्क 10 रु. डाक टिकट/मनीआर्डर से भेज रहा/रही हूं।
मेरा जन्म दिन
नोट : सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।
नये डायमण्ड मिनी कॉमिक्स मूल्य प्रत्येक 4/-
• प्राण का—नटखट बिल्लू • राजन इकबाल और खूनी हीरा • महाबली शाका और मौत की घाटी • ताऊजी और जादूगरनी हिडिम्बा
नई अमर चित्रकथायें मूल्य प्रत्येक 15/-
• आनन्द मठ • तुकाराम • इन्द्र व शचि • विद्यासागर • दुर्गादास • सुभाष चन्द्र बोस • गुरु नानक • चैतन्य महाप्रभु • पंचतंत्र (सियार का ढोल तथा अन्य कहानियां) • पंचतंत्र (ब्राह्मण व बकरा तथा अन्य कहानियां)
डायमण्ड कॉमिक्स प्रा. लि. X-30, ओखला इन्डस्ट्रियल एरिया, फेज-2, नई दिल्ली-110020

चन्दामामा

जुलाई १९९६

एक प्रति : ६.००

वार्षिक चन्दा : ७२.००

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

गुण प्रधान शिक्षा की आवश्यकता

पाठशालाओं व कालेजों के खुलने के साथ-साथ एक और शैक्षिक वर्ष शुरु हो गया। इनमें प्रवेश पानेवाले विद्यार्थियों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है। किन्तु विद्यार्थी जिस प्रकार की शिक्षा ग्रहण करना चाहते हैं, क्या इसके लिए आवश्यक पर्याप्त सुविधाएँ हैं?

'एकाडमी आफ सैन्सेस' बंगलोर के अनुसार, दस वर्षों के पहले पाठशालाओं में विद्या प्राप्त करनेवाले विद्यार्थियों की संख्या १,२०,००० थी। और यह संख्या औसतन् तीन प्रतिशत के हिसाब से बढ़ती जा रही है। इसकी तुलना में निम्नलिखित सच्चाइयाँ बहुत ही डरावनी लग रही हैं। लगभग साठ प्रतिशत पाठशालाओं में एक भी श्यामपट नहीं है। तीस प्रतिशत पाठशालाओं में न ही पुस्तकालय हैं, न ही प्रयोगशालाएँ।

अगर यही स्थिति जारी रही तो गुण प्रधान शिक्षा की संभावना नहीं दीखती। ये शैक्षिक संस्थाएँ 'कारखाने' बनकर रह जाएँगी। हाँ, इससे उन्हें धन-लाभ तो होगा, पर विद्यार्थियों के भविष्य-जीवन पर बड़ा ही आघात सिद्ध होगा।

उच्च शिक्षा देनेवाली संस्थाओं में भी अवनति दीख रही है। 'एकाडमी आफ सैन्सेस' ने अपने सर्वेक्षण में बताया कि चालीस वर्ष पूर्व तीस से बत्तीस प्रतिशत तक के विद्यार्थियों ने विज्ञान-शास्त्र को अपना विषय चुना। परंतु अब उन्नीस से बीस प्रतिशत के विद्यार्थी ही इसे अपना विषय चुन रहे हैं। क्योंकि कालेजों व व्यवसायिक संस्थाओं में इन विषयों के अध्ययन के लिए पर्याप्त सुविधाएँ नहीं हैं।

देश में अति वेग से परिवर्तित होनेवाली परिस्थितियों को दृष्टि में रखते हुए यह बहुत ही आवश्यक है कि समय की चुनौती को स्वीकार करने के लिए वर्तमान स्थिति में तीव्र सुधार हो।

वर्ष : ४९ जुलाई १९९६ अंक : ११

एक प्रति : रु. ६/- वार्षिक चन्दा : रु ७२/-

अपने प्यारे चहेते के लिए जो हो दूर सुदूर
है न यहाँ अनोखा उपहार जो होगा प्यार भरपूर

चन्दामामा

प्यारी-प्यारी सी चंदामामा दीजिए उसे उसकी अपनी पसंद की भाषा में—
आसामी, बंगला, अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी, कन्नड
मलयालम, मराठी, उड़िया, संस्कृत, तमिल या तेलुगु
—और घर से अलग कहीं दूर रहे उसे लूटने दीजिए घर की मौज-मस्ती

चन्दे की दरें (वार्षिक)

आस्ट्रेलिया, जापान, मलेशिया और श्रीलंका के लिए

समुद्री जहाज़ से रु. 129.00 वायु सेवा से रु. 276.00

फ्रान्स, सिंगापुर, यू.के., यू.एस.ए.,
पश्चिम जर्मनी और दूसरे देशों के लिए

समुद्री जहाज़ से रु. 135.00 वायु सेवा से रु. 276.00

अपने चन्दे की रकम डिमांड ड्रॉफ्ट या मनी ऑर्डर द्वारा
'चन्दामामा पब्लिकेशन्स' के नाम से निम्न पते पर भेजिए:

सर्क्युलेशन मैनेजर, चन्दामामा पब्लिकेशन्स, चन्दामामा बिल्डिंग्स, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६.

समाचार-विशेषताएँ

स्पैन की राजनैतिक गतिविधियाँ

स्पैन में जनता ने परिवर्तन चाहा । १९८२ से सत्तारूढ सोशलिस्ट पार्टी को गद्दी से उतारा । मार्च ३ को स्पैन के संसद के निचले कार्टेस के चुनाव हुए । कुल स्थान हैं - ३५०. पिछले प्रधान मंत्री फिलिप गोन्ज़ालेज के नेतृत्ववाले सोशलिस्ट पार्टी को केवल १४१ स्थान मात्र प्राप्त हुए । जोस मेरिया अज्नार के 'पापुलर पार्टी' को १५६ स्थान प्राप्त हुए । अधिकार को हस्तगत करने के लिए उसे और २० स्थान चाहिये । 'कारलान नेशनल पार्टी' ने १६ स्थान जीते । 'बास्क नेशनलिस्ट पापुलर पार्टी' ने पाँच स्थान जीते, जिनका समर्थन पाकर सरकार बनायी गयी ।

सोशलिस्टों के प्रति विरोध के अनेक कारण हैं । उनमें से घूसखोरी प्रधान कारण है । गृहशाखा मंत्री ने 'डेथ क्वार्डस' की सहायता लेकर विपक्षी दल के 'भास्कनेशनलिस्ट' के कुछ कार्यकर्ताओं को मरवा डाला । इस कारण वे मंत्रि-पद से हटा दिये गये । 'कारलान नेशनलिस्ट पार्टी' ने शासन-पक्ष का समर्थन करने से इनकार कर दिया । शीघ्र ही चुनाव कराने उसने दबाव ड़ाला । यद्यपि देश की आर्थिक स्थिति दुरुस्त थी, फिर भी बेकारी की समस्या ४० प्रतिशत बढ़ गयी । इससे युवक भी नाराज़ हो उठे । इन सब कारणों से शासन-पक्ष के प्रति असंतृप्ति बढ़ती गयी ।

द्वितीय विश्व युद्ध (१९३९ से १९४५) के समय तानाशाह जनरल फ्रांको स्पैन का शासक रहा । स्पैन का राजा देश से भाग गया । फ्रांको ने घोषणा की कि उसकी मृत्यु के बाद फिर से स्पैन राजवंश के अधीन होगा और युवराज जुवान कार्लोस उसका उत्तराधिकारी होगा । यह घोषणा १९४७ में की गयी । यह २८ सालों के बाद याने १९७५ में, जनरल फ्रांको की मृत्यु के बाद अमल में आयी ।

१९७८ में स्पैन ने अपने नये संविधान को रूप दिया । 'डेमाक्रटिक पार्टी' की तरफ़ से अडोल्फो स्क्वारेज प्रधान मंत्री बने ।

१९८२ में जो चुनाव संपन्न हुए, उनमें गोन्जालेज के नेतृत्ववाले 'सोशलिस्ट वर्कर्स पार्टी' को अपूर्व विजय प्राप्त हुई । उन्होंने शासन की बागडोर संभाली । उसके बाद दो बार जो चुनाव हुए, उनमें उनकी शोहरत क्रमश: घटती गयी । गोन्जालेज चाहते थे कि चौथी बार भी वे ही प्रधान मंत्री बनें । किन्तु जनता का आशय कुछ दूसरा ही था ।

जब इस विषय को लेकर चर्चा होने लगी तो उनके उपनेता ने कहा ''इतनी कड़ुवी जीत, इतनी नाज़ुक हार कभी नहीं चखी ।''

सरफ़िरा गोविंद

गोविंद बहुत ही घमंडी है। यही सबका कहना है। किन्तु वह अधिकारियों से बड़े ही विनय से पेश आता है, इसलिए ज़िन्दगी में उसने तरक़्क़ी पायी। थोड़े ही दिनों में राजा के दरबार में उसे मुख्य नौकरी भी मिली।

इस देश का राजा इंद्रकांत चिड़चिड़े स्वभाव का था। बात-बात पर वह राजकर्मचारियों पर नाराज़ होता और उन्हें डाँटता रहता था। एक दिन वह किसी बात को लेकर बहुत ही परेशान था। दुर्भाग्यवश गोविंद उसके सामने आया तो उसने डाँटते हुए उससे कहा "फिर कभी भी अपना मुख मत दिखाना।"

गोविंद अपने दुर्भाग्य पर अपने आपको गाली देता रहा और सोचता रहा कि आगे क्या करूँ?

मंत्री सुधीर को इस विषय का पता चला। उसने गोविंद को बुलवाया और उससे कहा "तुम पढ़े-लिखे हो, अक़्लमंद हो? बिना किसी कारण के, राजा का तुम पर क्रोधित होना मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। मेरे साथ चलो, उनसे कैफ़ियत तलब करेंगे।"

गोविंद ने फ़ौरन कहा "नाराज़ तो राजा हुए, मैं नहीं। शायद हो सकता है, मुझी से कोई ग़लती हुई होगी। कैफ़ियत तो मुझे देनी होगी। क्या दूँ, मुझे सलाह दीजिये।"

सुधीर राजा के यहाँ जाकर उससे बोला "प्रभू, बात-बात पर मासूम लोगों पर आपका यों नाराज़ होना अच्छी बात नहीं है। यह तो बुरी आदत है। इस आदत की वजह से आप कितने ही अच्छे लोगों के दिलों को दुखा रहे हैं। गोविंद अच्छा व विनयशील कर्मचारी है। आपने अनावश्यक ही उसे गाली दी। बेचारा बहुत ही दुखी है।"

लक्ष्मी कामत

राजा इंद्रकांत थोड़ी देर तक मौन रहा। फिर बोला "अनावश्यक ही नाराज होने के अपराध में कैफ़ियत तो मुझे देनी चाहिये, पर उल्टे गोविंद का यह सोचना कि स्वयं राजा से माफ़ी माँगूं उसके विनय गुण का ज्वलंत उदाहरण है। उसकी जितनी भी तारीफ़ की जाए, कम है। उसे अवश्य ही कोई पुरस्कार देना चाहिये। सीतापुर गाँव के ग्रामाधिकारी की जगह खाली है। उसे उस स्थान पर नियुक्त कर रहा हूँ।"

यों गोविंद सीतापुर का ग्रामाधिकारी बना। लंबे अर्से से वह राज-दरबार के अधिकारियों की सेवाएँ करता रहा, उनके हाँ में हाँ मिलाता रहा। बिना किसी कारण के भी वह मंत्री व राजा की बातों पर वाहवाही करता रहा। यह तो उसकी दिनचर्या हो गयी थी। किन्तु अब यह नौकरी उसे बिल्कुल अजीब और नयी लगने लगी। गाँव का सबसे बड़ा अधिकारी वही था। केवल उसी की बात चलती थी।

गाँव से संबंधित कामों में उसका सलाहकार था रमेश। वह बुद्धिमान व निष्कपटी था। वह किसी दूसरे के मामले में दख़ल नहीं देता। अपना जो काम है चुपचाप पूरा करता था। वह निस्वार्थी था।

रमेश की सलाहों के मुताबिक गोविंद ने कुछ समय तक गाँव की देखभाल अच्छी तरह से की। शासन सुव्यवस्थित रहा।

गोविंद कभी-कभी गाँव के प्रमुखों को बुलाता और उनसे अपने शासन की पद्धति पर उनके अभिप्राय पूछता। एक दिन उन्होंने मुक्तकंठ से कहा "जब तक रमेश की सलाहें आपको मिलती रहेंगीं, तब तक आपको कोई तकलीफ़ नहीं होगी। अवश्य ही आपका शासन समर्थ होगा।" उनकी ये बातें गोविंद को कड़वी लगीं। उसके दिल को चोट लगी। उसने गोविंद को बुलवाया और पूछा "गाँव की परिस्थितियाँ सुधर गयी हैं। इसका कारण मेरा सामर्थ्य है या तुम्हारी सलाहें?"

रमेश हँस पड़ा और बोला "इसके पहले जो ग्रामाधिकारी था, उसे भी मैं सलाहें देता रहता था। सलाहें अच्छी हैं या बुरी, यह जानने की शक्ति तो ग्रामाधिकारी में होनी चाहिये। मेरी दृष्टि में सलाहों में कोई विशिष्टता नहीं होती। निस्संदेह ही

सामर्थ्य आप ही का है।''

उसका उत्तर गोविंद को संतुष्ट नहीं कर सका। उसे लगा कि रमेश के कथन में यह अर्थ निहित है कि उसकी सलाहें मानने में ही ग्रामाधिकारी की भलाई है। उसने इस स्थिति को बदलने का फ़ैसला किया। पूछताछ करने पर उसे मालूम हुआ कि शकुनि नामक एक व्यक्ति और रमेश में दुश्मनी है।

एक दिन गोविंद ने रमेश से कहा ''किसी एक ही की सलाहों से अच्छे-बुरे का पता नहीं चलता, इसलिए मेरी राय है कि आगे से शकुनि से भी सलाहेंलेता रहूँ।''

''जब तक आपमें विचक्षण-ज्ञान है, तब तक किसी की भी सलाह सही ही साबित होगी'' कहकर रमेश चुप रह गया। उस दिन से गोविंद हर दिन शकुनि की ही सलाहें लेता रहा।

हाँ, यह ज़रूर है कि शकुनि अक्लमंद था, पर उसमें अधिकार-दर्प आवश्यकता से अधिक था। उसका विचार था कि ग्रामाधिकारी का सलाहकार हूँ, इसलिए उसकी प्रत्येक पहचान होनी चाहिये। उसने रमेश से अपना विचार व्यक्त किया और कहा ''हम दोनों ग्रामाधिकारी के सलाहकार हैं। इसलिए ग्रामाधिकारी के दफ़्तर में हमें भी अलग-अलग कमरे दिये जाने चाहिये। हम गोविंद से अपनी मांग पेश करेंगे।''

''सलाह देना भी क्या कोई बड़ा काम है? इसके लिए अलग कमरे की क्या ज़रूरत है? बेकार की यह माथापच्ची क्यों? छोड़ तो सही।'' रमेश ने कहा।

उस दिन शाम को शकुनि, गोविंद से मिला और कहा ''आपको सलाह देने के कार्य को मैं बहुत ही महत्वपूर्ण मानता हूँ, इसलिए चाहता हूँ कि मेरे लिए एक अलग कमरे का प्रबंध हो। किन्तु सलाह देने का कार्य रमेश की दृष्टि में महत्वपूर्ण नहीं है। वह तो कहता है कि क्या कहीं सलाह देना भी बड़ा काम कहलाता है? उसकी दृष्टि में सलाह का कोई मूल्य ही नहीं।''
''ऐसी बात है। आजकल मैं तुम्हीं से सलाहें ले रहा हूँ। उससे तो पूछ नहीं रहा हूँ, इसलिए ईर्ष्या-वश यों कहता होगा। तुम दोनों को इस भवन में अलग-अलग कमरा देने का आज ही इंतज़ाम करता

हूँ । किन्तु सलाहें तो तुम्हीं से लेता रहूँगा ।'' गोविंद ने कहा ।

''उसने तो मना कर दिया । फिर उसके लिए अलग कमरा क्यों?'' शकुनि ने पूछा ।

गोविंद ने कहा ''लोगों को लगना नहीं चाहिए कि मैं पक्षपात दिखा रहा हूँ ।'' उस दिन से शकुनि फैल गया और गोविंद से कहने लगा ''ग्रामाधिकारी गाँव का राजा है । उसे सदा दर्पपूर्ण होना चाहिये । सबसे बात करनी नहीं चाहिये । किसी से भी हँसकर बात करनी नहीं चाहिये । कोई प्रणाम करे तो देखना और चुप रह जाना । सेवकों को हमेशा डाँटते रहना चाहिये । जो निडर व घमंडी हैं, उन्हें समझा-बुझाकर झुकाना चाहिये ।''

गोविंद स्वयं घमंडी था, इसलिए उसे ये सलाहें अच्छी लगीं । तुरंत उन्हें अमल में ले आया । फिर भी किसी को भी उससे सवाल करने का साहस नहीं हुआ । इससे गोविंद अपनी धाक और ज़्यादा जमाने लगा । उसकी व्यवहार-पद्धति में काया पलट हो गयी । सब उससे डरते भी थे क्योंकि राजा से उसके अच्छे ताल्लुक़ात थे ।

किन्तु रमेश का व्यवहार और लोगों के व्यवहार से भिन्न था, विरुद्ध था । रमेश ने जब देखा कि गोविंद प्रतिनमस्कार नहीं कर रहा है तो उसने भी नमस्कार करना छोड़ दिया । गोविंद ने सलाह माँगनी छोड़ दी तो वह भी सलाह देने से दूर ही रहने लगा ।

एक दिन गोविंद, रमेश से चिढ़ता हुआ

बोलने लगा तो उसने कहा ''पहले बताइये कि मुझसे क्या ग़लती हुई । अनावश्यक ही मुझपर दोष थोपेंगें तो चुप बैठनेवाला नहीं हूँ । राजा से शिकायत करूँगा ।''

शिकायत का शब्द सुनते ही गोविंद डर गया । पर रमेश की धमकी पर नाराज़ होकर बोला ''बोलो, क्या शिकायत करोगे? बोलो ।''

रमेश ने जब कहना शुरु किया तो उसमें आक्रोश भर आया और बोला ''बेकार बातों से क्या फ़ायदा? मैं तुम्हारी बातें सुनने तैयार नहीं हूँ । आगे कभी भी मुझसे बात मत करो ।''

रमेश ने कहा ''आपने पूछा तो मैंने जवाब दिया । अगर आप नहीं चाहते तो मैं भी आप से बात ही नहीं करूँगा ।'' कहकर वह वहाँ से चला गया ।

गोविंद ने गुमाश्ते के द्वारा रमेश को ख़बर भिजवायी। संदेह दूर करने के लिए उसे स्वयं आने को कहलवाया। रमेश ने भी गुमाश्ते के द्वारा ही संदेहों के समाधान भेजे। गोविंद ने शकुनि से कहा ''रमेश बड़ा सरफिरा है।''

''आप बहुत अच्छे आदमी हैं। उसे अपने प्रताप व अधिकार का मज़ा चखाइये। वही दौड़-दौड़े आयेगा।'' शकुनि ने कहा।

उस दिन से रमेश की तक़लीफ़ें शुरु हुई। उसके घर व खेत पर कर बढ़ाया गया। खेत को सींचने के लिए पानी उपलब्ध होने नहीं लगा। उसके अनाज का सही मूल्य मिलने नहीं लगा। किन्तु रमेश चुपचाप ये अन्याय सहता रहा।

कुछ दिनों बाद रमेश की बेटी की शादी हुई। उसने सब ग्रामीणों को स्वयं बुलाया। पर गोविंद को उसने निमंत्रण-पत्र मात्र भेजा। गोविंद को लगा कि जान-बूझकर उसका अपमान किया गया है। उसे रमेश को किसी साजिश में फँसाने की सूझी।

नौकर व गाँव के रखवाले से रमेश को इसकी ख़बर मिली। राजा का मुख्य सलाहकार सुधीर उसका निकट रिश्तेदार था। रमेश राजधानी गया और उससे गोविंद के अन्यायों के बारे में बताया।

सब कुछ सुनने के बाद सुधीर ने कहा ''गोविंद की यह हिम्मत। यहाँ तो बिल्ली बनकर दुम दबाकर चुप बैठा रहता था और वहाँ पहुँचकर क्रूर जंतु बन गया?

इसके बाद उसने गोविंद से बात ही नहीं की। इसपर गोविंद बहुत ही नाराज़ हो गया। पर उसे मालूम नहीं हुआ कि आगे क्या करना चाहिये। उसने शकुनि से सलाह पूछी। तो उसने कहा ''इस गाँव की आबादी का पूरा हिसाब रमेश के पास है। उससे कहिये कि इस संबंध में आपके कुछ संदेह हैं और उन संदेहों को दूर करना उसका कर्तव्य है। लाचार होकर उसे आपसे बात करनी पड़ेगी।''

गोविंद ने कहा ''यह कैसे संभव है। पहले उससे मैं क्यों बात करूँ? इससे क्या मेरा मान घट नहीं जायेगा?''

शकुनि ने कहा ''इससे मान के घटने या बढ़ने का सवाल ही नहीं उठता। आप अपने गुमाश्ते को भेजिये और उसे बुलाइये।''

तुम निश्चिंत रहो । मैं ऐसी तरकीब निकालूँगा, जिससे जल्दी ही उसकी नौकरी छूट जायेगी ।''

सुधीर की बातों पर रमेश हँस पड़ा और कहा ''इससे समस्या का परिष्कार नहीं होगा । आपको तो ऐसा कोई उपाय सोचना चाहिये, जिससे अधिकार के नशे में मतवाले होकर अपराध करनेवालों के लिए सबक साबित हो ।''

'हाँ' के भाव में सिर हिलाते हुए सुधीर ने कहा ''राजा इंद्रकांत भी घमंडी हैं । इधर कुछ दिनों से अस्वस्थ हैं । शासन-संबंधी कार्य युवराज चंद्रकांत ही संभाल रहा है । चंद्रकांत समर्थ, बुद्धिमान और विनयशील है । पिता की ग़लतियों पर वह बहुत दुखी है । तुम्हारी समस्या का परिष्कार - मार्ग वही सुझा सकता है ।'' सुधीर, रमेश को युवराज के पास ले गया । पूरा विवरण सुनने के बाद चंद्रकांत ने कहा ''राजकर्मचारी, राज प्रतिनिधि, आख़िर ग्रामाधिकारी भी गोविंद को ही आदर्श मानकर उसकी कार्य-शैली का अनुकरण कर रहे हैं । सब घमंडी और सरफिरे हो गये हैं । इन्हें सुधारने का एक ही मार्ग है । मैं तुम्हारे गाँव आऊंगा । बहुत पहले की बात है । एक बार मेरे पिताजी अनावश्यक ही गोविंद पर नाराज़ हो उठे । अपने पिता की तरफ़ से मैं उससे क्षमा माँगूंगा । मेरी इस चर्या पर गोविंद शायद सुधर जाए ।''

''किन्तु आप अपनी क्षमा संस्कृत में

बताइये । मैं उसका अनुवाद करूंगा और गोविंद को बताऊंगा । उसे संस्कृत भाषा नहीं आती'' रमेश ने कहा ।

चंद्रकांत समझ गया कि रमेश ने ऐसा क्यों कहा । वह अपने आप हँस पड़ा । फिर युवराज, रमेश और सुधीर सीतापुर गये ।

उन सबको इकट्ठे देखकर गोविंद घबरा गया । चंद्रकांत की बात करने की पद्धति को देखते हुए उसमें साहस बढ़ा । जब उसे ज्ञात हुआ कि युवराज स्वयं उससे क्षमा मांगने आये हैं तो उसमें घमंड और बढ़ गया । उसे लगा कि अब रमेश की हार निश्चित है । अब वह कहीं का न रहेगा । ग्रामाधिकारी के भवन में युवराज, सुधीर, रमेश, शकुनि, गोविंद तथा गाँव के कुछ प्रमुख इकट्ठे हुए । चंद्रकांत ने गला साफ़ करते हुए कहा ''मेरे पिताजी से जो-जो

त्रुटियाँ हुईं, उन्हें अपने शासन-काल में सुधारने की आशा रखता हूँ। मैं गोविंद से, राजा की तरफ़ से माफ़ी माँग रहा हूँ। मैंने गुरुकुल में सब विद्याएँ संस्कृत में ही सीखीं। अब आपके सम्मुख आप ही की भाषा में बोलने में संकोच हो रहा है। अतः मैं अपने विचार संस्कृत में व्यक्त करूँगा। रमेश अनुवाद करके गोविंद को बतायेगा।''

शकुनि ने गोविंद के कान में कहा ''युवराज बड़े अक़लमंद हैं। रमेश को लाचार होकर अब आपसे बात करनी ही पड़ेगी।''

गोविंद अपनी उन्नत स्थिति पर बहुत ही संतुष्ट दिखायी पड़ा। चंद्रकांत ने जो संस्कृत में बताया, उसे रमेश, गोविंद को इशारों द्वारा बताने लगा। वह उसकी समझ में नहीं आया तो उसने युवराज से कहा, ''प्रभू, इसका घमंड देखिये। मुझसे बात करने इसे मना किया, इसलिए यह संकेतों द्वारा कुछ बताने का नाटक कर रहा है। आप जैसे बड़ों को देखते हुए भी इसमें कोई सुधार नहीं आया।''

चंद्रकांत ने उत्तर में कहा ''गर्व और आत्मविश्वास में काफ़ी भेद है। जिसने बात करने से मना किया, उससे बात न करना आत्मगौरव है। युवराज होकर भी तुमसे क्षमा माँगकर मैंने एक आदर्श की स्थापना की। रमेश से तुम्हारा कहना कि मुझसे बातें मत करो, सरासर ग़लत है। अपनी ग़लती पर तुम पछता नहीं रहे हो, उससे क्षमा माँगने तुम तैयार नहीं हो, यह तुम्हारा घमंड नहीं तो और क्या है? मेरी दृष्टि में तुम बड़े घमंडी हो।''

गोविंद को लगा कि युवराज ने उसे चाबुक से मारा। उसने शर्मिंदा होकर सिर झुका लिया और रमेश से माफ़ी माँगी। रमेश ने हँसते हुए कहा ''ग़लती करने पर क्षमा माँगने की ज़रूरत नहीं। ग़लती महसूस की जाए, यही बहुत है। अच्छा हुआ, हमारे आपस की समस्या का परिष्कार हो गया।''

इस धर्मसूत्र को जान जाने के बाद गोविंद ने अपने जीवन-काल में किसी घमंडी का सामना नहीं किया।

रूपधर की यात्राएँ

१२

(विदेशों में रूपधर को नाना प्रकार के कष्ट झेलने पड़े। जब वह स्वदेश पहुँचा, तब उसके बेटे ने अपने पिता के बारे में जानकारी प्राप्त करने का निश्चय किया। रूपधर की पत्नी से विवाह करने के लिए कितने ही राजकुमार उसके घर में आसन जमाये बैठे हैं और जाने का नाम नहीं ले रहे हैं। रूपधर के बेटे धीरमति को उनका यह व्यवहार बिल्कुल पसंद नहीं आया। इस समस्या के परिष्कार के लिए उसने नगर के बड़ों की एक बैठक भी बुलायी। पर, कोई फ़ायदा नहीं हुआ। इसलिए वह अपने पिता के संबंध में जानकारी पास करने नौका में इथाका से पैलास निकल पड़ा) - बाद

नौका पैलास तट पर दूसरे दिन सबेरे पहुँची। रास्ते में धीरमति मन ही मन सोचता रहा "इस कार्य में मुझे सफलता प्राप्त होगी कि नहीं। अगर सफल नहीं हो पाया तो आगे मैं क्या करूँ? किस प्रकार अपने दुश्मनों को घर से निकालूँ। माता को उनसे कैसे बचाऊं? अगर पिताजी के जीवित होने का समाचार दृढ़ रूप से मालूम हो जाए तो कितना अच्छा होगा। उनकी उपस्थिति मात्र से दुश्मन भाग जाएँगे। पिताजी के बारे में मैंने बहुत सुन रखा। उनकी वीरता की कथाएँ सुनकर मैं कितना पुलकित हो गया। ग्रीकों की विजय में उनका बड़ा हाथ है। मेरे पिता होते तो हमें इन कष्टों का सामना न करना पड़ता। माताजी को ऐसी बुरी नज़र से देखने का साहस भी कोई नहीं कर पाता। ऐसे साहसी बाप का बेटा होकर भी मैं कुछ करने की स्थिति में नहीं हूँ। मेरी नसों में भी उन्हीं का रक्त प्रवाहित हो रहा है,

परंतु मैं अपने को क्यों इतना अशक्त महसूस कर रहा हूं ।

कितने ही वीरों के पुत्रों को मैंने देखा, जो अपने पिता की ही तरह अपने हक़ों के लिए लड़ रहे हैं । भविष्य में मैं भी अपने दुश्मनों से लड़ूंगा और कहलाऊँगा कि मैं भी अपने पिता का योग्य वारिस हूं । शत्रु मेरी अच्छाई का नाजायज़ फ़ायदा उठा रहे हैं । अब समय आ गया है कि मैं भी उन दुष्टों का सामना करूं और उनका नाश कर दूं ।'' यों सोचते-सोचते वह सो नहीं पाया । सबेरे उसने देखा कि समुद्र-तट पर लोग वरुण देव को काले बैलों की बलि चढ़ा रहे हैं । वहां नौ गुटों में लोग बँटे हुए हैं । हर एक गुट में पांच सौ लोग हैं । तट पर नौ चूल्हे जल रहे हैं । तरह-तरह के पकवान पक रहे हैं । नाविकों ने पाल उतारा और नाव को बाहर ले आये । धीरमति के साथ आया वृद्ध सहन भी नीचे उतरा और दोनों पैदल चलने लगे । वे बड़ी ही तीक्ष्णता से लोगों को देखते हुए आगे बढ़ने लगे ।

''हम अब नवद्योत से मिलने वाले हैं । बिना किसी झिझक के उससे कह दो कि तुम यहां किस काम पर आये । अपने पिता के बारे में जानकारी प्राप्त करो । पूछना कि तुम्हारे पिता के बारे में उन्हें कोई समाचार मिला? वे जिन्दा हैं या मर गये? मरे तो कब और कहां मरे? नवद्योत से पूछो कि क्या उसे इस संबंध में कुछ मालूम है? उसे सचमुच इसका पता हो तो अवश्य बतायेगा । वह सत्य छिपानेवालों में से नहीं है । वह सज्जन है । उससे तुम्हारा पूछना ही संगत होगा'' सहन ने धीरमति से कहा ।

''मैं तो लड़का हूं । मुझे मालूम नहीं कि बड़ों से बातें कैसे की जाएँ । इसलिए

मुझे डर लग रहा है।" धीरमति ने अपनी अशक्तता व्यक्त की।

सहन उसे धैर्य दिलाता हुआ उस शिबिर में ले आया, जहाँ नवद्योत अपने पुत्रों के साथ बैठा हुआ था। नयों को आते हुए देखकर नवद्योत के पुत्रों ने आगे बढ़कर उनका स्वागत किया। फिर उन्हें नवद्योत के पास ही मुलायम चमड़े बिछाकर विठाया और उनके लिए भोजन-पदार्थ तथा अंगूर का रस ले आये।

पेट भर खाने के बाद नवद्योत ने अतिथियों से पूछा "अब बताइये, आप कौन हैं? किस देश से समुद्र पार करके आ रहे हैं? किस काम पर यहाँ आना हुआ? या कहीं जाते-जाते यहाँ रुक गये?"

धीरमति ने साहस बटोरकर उत्तर दिया "महाराज, हम इथाका के हैं। निजी काम पर आया हूँ। युद्धक्षेत्र में ट्रोयों के विरुद्ध आप ही के साथ-साथ लड़े रूपधर के बारे में विवरण जानने यहाँ आया हूँ। वे मेरे पिता हैं। युद्ध में जिन-जिन्होंने भाग लिया, उन सबके बारे में जानकारी प्राप्त हुई है। परंतु मेरे पिता के बारे में कोई समाचार मालूम नहीं हुआ। अगर आपको निश्चित रूप से मालूम हो कि वे मर चुके हैं तो बिना छिपाये सच बता दीजिये। आप सबने मिलकर युद्धक्षेत्र में कितने ही कष्टों का सामना किया। मैंने आपके और मेरे पिताजी की मैत्री के बारे में सुना। आपने और मेरे पिताजी ने मिलकर युद्ध-क्षेत्र में जो वीरोचित कार्य किये, उनका भी विवरण मैं जानता हूँ। पर मैं नहीं जानता कि आप दोनों कब और कैसे अलग हो गये। कृपया बताइये कि आपको मेरे पिता के बारे में क्या मालूम है।"

तब नवद्योत ने यों कहा "पुत्र, तुम्हारी

बातों से बीती सब बातें एक साथ याद आ गयीं। वज्रकाय के नेतृत्व में हम सब जहाज़ में निकले और ट्रोय नगर को घेरा। नौ सालों तक हमने घोर युद्ध किया। हमारे योद्धाओं में से कितने ही योद्धाओं ने अपने प्राणों की आहुति दी। उन घटनाओं को बताने में बहुत समय लग जायेगा। उन नौ सालों में हमने बहुत कष्ट झेले। हम भी कई बार मरते-मरते बच गये। किन्तु भगवान की कृपा से हम बच गये। हमने विजय पायी। पर इतना तो दावे के साथ बता सकता हूँ कि इस प्रयास में तुम्हारे पिता की टक्कर का कोई नहीं था। हम दोनों के बीच कभी भी भिन्नता नहीं आयी। हम दोनों की विचार-पद्धति एक समान होती थी। हमारी सलाहें भी सदा एक ही प्रकार की होती थीं। जो होना था, हो गया। जब हम लौट रहे थे तब हममें झगड़े शुरू हो गये। राराजा और प्रताप के बीच भिन्न-भिन्न अभिप्रायों ने तीव्र रूप धारण किया। दोनों ने एक दूसरे को ललकारा। शेष योद्धा भी दो गुटों में बँट गये। उन दोनों भाइयों के पक्षों में अपनी-अपनी इच्छा व सुविधा के अनुसार शामिल हो गये। दूसरे दिन आधी संख्या से ज्यादा लोग प्रताप के साथ नावों में निकले। बाकी राराजा के साथ ही देवताओं के दर्शनार्थ ठहर गये। जैसे ही हम टेनेडोस पहुँचे, तुम्हारे पिता ने कहा कि मैं अलग चला जाऊँगा। उसके साथ-साथ कुछ योद्धा भी चले गये। मैं, देवमय और कुछ लोग सीधे घर चले आये। बात असल में यों हुई। बेटे, बाक़ी के बारे में मुझे कुछ नहीं मालूम। सुना है कि वज्रकाय का पुत्र नवयोध अपने अनुचरों के साथ सक्षेम पहुंच गया। यह भी मालूम हुआ कि शेष योद्धा भी सकुशल अपने-अपने घर पहुँच गये।

राराजा स्वदेश पहुँचा। अजबल ने राराजा की पत्नी को अपने पक्ष कर लिया और षड्यंत्र रचकर उसकी दारुण हत्या कर दी। यह तो तुमने सुना ही होगा। राराजा का बेटा साहसी व योग्य है। मौक़ा पाकर उसने अजबल को मार ड़ाला और अपने पिता की हत्या का बदला लिया।''

धीरमति ने नवद्योत से कहा ''वह बड़ा भाग्यवान है। मुझे मालूम नहीं कि मैं उसकी तरह कब भाग्यवन बन पाऊँगा।

मेरे घर में कुछ बदमाश आसन जमाये बैठे हैं और हम पर अत्याचार करते जा रहे हैं, हमारे घर को खोखला कर रहे हैं। जानता नहीं, मैं उन्हें भगा पाऊँगा या नहीं। मेरे प्रतीकार की ज्वाला बुझ पायेगी कि नहीं।'' दर्द-भरे स्वर में उसने कहा।

''हाँ बेटे, मैंने भी तुम्हारे घर में बैठे बदमाशों के बारे में सुना है। तुम क्यों चुप बैठे हो? उनके अत्याचार क्यों सहे जा रहे हो? आख़िर वे सब तुम्हारे शत्रु ही तो हैं। उस बुद्धिमति की कृपा तुम पर भी हो तो अवश्य ही वह दिन जल्दी ही आयेगा। जब कि तुम उन सब अत्याचारियों का नेस्तनाबूद कर सकोगे।'' नवद्योत ने कहा।

बातों-बातों में शाम ढल गयी। धीरमति लौटने निकल पड़ा। पर नवद्योत ने उसे जाने नहीं दिया। कहा ''रात को रूपधर का बेटा नौका में सोये? कभी नहीं। क्या मेरा अपना घर नहीं? बिछौने नहीं हैं क्या?'' वह धीरमति को अपने घर ले गया।

सहन बाक़ी नाविकों का कुशल-मंगल जानने के लिए नौका के पास चला गया।

दूसरे दिन सबेरे ही धीरमति जागा और स्नान करके कपड़े बदल लिये। प्रताप के यहाँ ले जाने के लिए एक घोड़ा-गाड़ी का प्रबंध किया गया। खाने की सामग्री भी लेकर नवद्योत का एक बेटा धीरमति के साथ गाड़ी में आया।

दो दिनों की लंबी यात्रा के बाद वे प्रताप के यहाँ पहुँचे।

ठीक उसी समय प्रताप अपनी पुत्री का विवाह वज्रकाय के पुत्र से करा रहा था। उस विवाह में भाग लेने आसपास के प्रदेशों से बहुत-से लोग आये। एक विशाल मैदान में दावत दी जा रही थी। विनोद का भी आयोजन हुआ था। इतने में प्रताप का एक अंगरक्षक आया और कहा ''महाराज, दो युवक गाड़ी से उतरे। उन्हें अंदर बुलाऊँ या कहीं जाने को कहूँ?''

प्रताप ने नाराज़ होते हुए कहा ''मुझे मालूम नहीं था कि तुम इतने बड़े मूर्ख हो। हम जब-जब पराये देश गये तब वहाँ हमने वहाँ के अपरिचित लोगों का आतिथ्य पाया। तुरंत जाओ और दोनों युवकों को यहाँ ले आओ।''

थोड़ी देर बाद धीरमति और नवद्योत का बेटा दोनों आये । वहाँ का माहौल देखकर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ ।

लग रहा था कि वहाँ सूर्य और चंद्र दोनों प्रकाशवान हैं । नौकर उन्हें बुला ले गया, स्नान कराया और कपड़े पहन-वाये । भोजन करने प्रताप के बगल में ही दोनों को बिठाया । प्रताप ने कहा "बेटो, तुम दोनों देखने में राजकुमार लग रहे हो । पहले भोजन कर लो । बाद जानूँगा कि तुम कौन हो और कहाँ से आये हो?"

भोजन समाप्त होने के बाद धीरमति ने अपने साथी के कानों में कहा "देखा, यहाँ कितनी चाँदी और कितना सोना है?" प्रताप ने उसकी बातें सुन लीं । उसने कहा "पुत्रो, नाना देशों में घूमकर यह संपत्ति कमायी है । किन्तु ट्रोय के युद्ध में मेरे कितने ही अनुचरों की जानें गयीं । अगर वे जीवित होते तो इस संपदा के न होते हुए भी मैं सुखी रह पाता । कभी-कभी उनकी याद में आँसू बहाता रहता हूँ । लेकिन मेरे आंसू बहते हैं, सब से अधिक रूपधर के लिए । कभी-कभी तो जब उसकी याद आती हैं, मैं सो भी नहीं पाता । जब मेरी ही यह हालत है तो पता नहीं, बेचारे उसके पिता, उसकी पत्नी और उसके पुत्र पर क्या गुज़रता होगा । कितनी बेचैनी से वे उसका इंतज़ार करते होंगे । वे उसके लिए कितना तड़पते होंगे ।" प्रताप ने चिंतित होते हुए कहा ।

इन बातों को सुनते ही धीरमति का दुख उमड़ पड़ा । जब वह आँखें पोंछ रहा था, तब भुवनसुंदरी वहाँ आयी ।
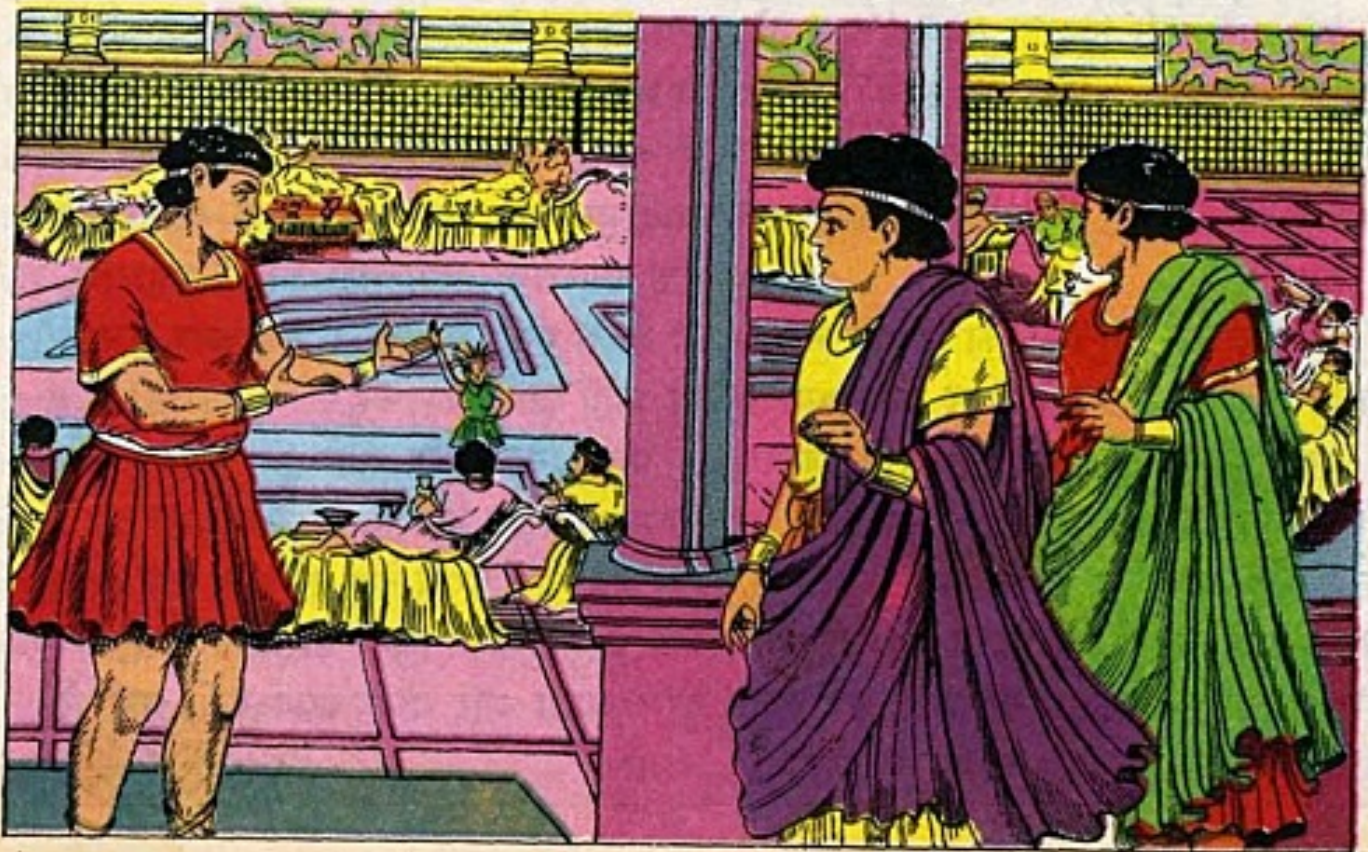
धीरमति को देखते ही उसने कहा "मालूम नहीं, यह युवक कौन है, परंतु देखने में हू ब हू रूपधर की ही तरह है।"

धीरमति को ग़ौर से देखते हुए प्रताप ने कहा "हाँ, हाँ, तुमने ठीक कहा।"

नवद्योत के बेटे ने प्रताप से कहा "महाराज, आपका अनुमान सच है। यह रूपधर का बेटा ही है। रूपधर के न होने की वजह से इसका घर उजड-सा गया है। यह बड़ी ही आफ़त में फँसा हुआ है। आप शायद उचित सलाहें दे पायेंगे, इस आशा से मेरे पिताश्री नवद्योत ने इसे आपके पास भेजा है।"

"कितनी विचित्र बात है कि रूपधर का बेटा मेरे घर आये।" प्रताप ने कहा और रूपधर के बारे में कई बातें कहीं।

अपने शरीर पर घावों के निशानें लगाकर रूपधर का ग्रीक शिबिर से भागे हुए एक गुलाम का रूप धारण करना और नगर में प्रवेश करना आदि बीती बातें बताते हुए भुवनसुंदरी ने कहा कि उस वेष में भी मैं उसे पहचान पायी। जब वे सब लोग काठ के घोड़े के अंदर ट्रोयों पर आक्रमण करने तैयार बैठे थे, तब उसका वहाँ आना और उसका हर एक का नाम लेकर पुकारना तथा अंदर बैठे कुछ योद्धा जब बाहर आने को उतावले हो रहे थे, तब रूपधर का उन्हें रोकना आदि बीती घटनाएँ भुवनसुंदरी और प्रताप ने बड़े ही रोचक ढंग से बतायीं।

सब कुछ सुनने के बाद धीरमति ने कहा "महाराज, मैं अपने पिता के बारे में जानने के लिए ही आपके पास आया हूँ। आपको जो मालूम है, बिना छिपाये बताइयेगा।"

"जो कुछ भी मुझे मालूम है, बताऊँगा। मैं ईजप्ट देश में फँस गया था। समुद्रों पर घूमते रहनेवाले एक बूढ़े से मेरी मुलाक़ात हुई। उसने अनेकों आदमियों के बारे में बताते हुए मुझसे कहा कि रूपधर ने अपने सब अनुचरों को खो दिया। अब वह किसी द्वीप में बंदी बनकर सम्मोहिनी के चंगुल में फँसा हुआ है।"

- सशेष

'चन्दामामा' की ख़बरें

अति विचित्र हँसी

सुप्रसिद्ध 'गिन्नीस बुक आफ रिकार्डस' की तरह रिप्लेस संस्था संसार के कोने-कोने में होनेवाली विचित्र विशेषताओं से भरी घटनाओं का समीकरण करती है, जिन्हें 'रिप्लेस बिलीव इट आर नाट' नामक पुस्तक में प्रकाशित करती है। इस पुस्तक में ऐसे कई विषय होते हैं, जिनका विश्वास नहीं होता। रिप्लेस संस्था अमेरीका के हास्यप्रिय टेक्सास नगर के नागरिकों के लिए प्रत्येक रूप से से एक हँसी-स्पर्धा का आयोजन कर रही है। विचित्र रूप से जो हँसेंगे, उन्हें १५० डालर (क़रीबन पंद्रह हज़ार रुपये) का इनाम दिया जायेगा। जो इस स्पर्धा में भाग लेने की इच्छा रखते हैं, उन्हें रिप्लेस संस्था को फोन करना होगा और हँसना होगा। वह हँसी रिकार्ड की जायेगी। हँसनेवालों में से जो बहुत ही विचित्र रूप से हँसेंगे, उन्हें पुरस्कार दिया जायेगा।

अदालत में कुत्ता

अमेरीका के लासएंजल्स के हेराल्ड मार्ष नामक वकील 'डेविल मार्ष' नामक एक कुत्ते को तीन सालों से पाल रहे हैं। जब-जब वे होटल जाते, तब-तब अपने साथ इस कुत्ते को ले जाते थे। एक दिन होटल के मालिकों ने एतराज जताया कि कुत्ता होटल में लाया न जाए। उनका कहना था कि स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों ने इसपर आपत्ति उठायी। बस, अपने कुत्ते की तरफ़ से वकील हेराल्ड मार्ष ने, अदालत में मुकद्दमा दायर किया। "कुत्ता लगभग दस हज़ार सालों से मानव के साथ घूम रहा है, खा-पी रहा है, सो रहा है और यों सहजीवन बिता रहा है। पागल कुत्ते के काटने से ही राबिस होता है। स्वस्थ कुत्तों से कोई नुक़सान नहीं पहुँचता। इनसे कोई बीमारी नहीं फैलती" वकील का यह तर्क था।

कैलेंडर रिकार्ड

तीन विलक्षण संकलनों को मिलाने पर होते हैं दो हज़ार पाँच सौ पन्ने। इन पुस्तकों के लिए उपयोग में लाये गये काग़ज़ का दाम है, पाँच हज़ार रुपये। इन तीन पुस्तकों की एक ही प्रति है। जानते हैं, इन पुस्तकों का क्या विषय है? यह है कैलंडर। ई.सदी १ से १०,००० वर्षों तक के महीने, तारीखें आदि विवरण इनमें दर्ज हैं। १९९९, जून पहली तारीख, कौन-सा वार है, जानना चाहेंगे? उस कैलेंडर की तीसरी पुस्तक देखें, तो आप जान जाएँगे। अद्भुत इस कैलेंडर को तैयार किया है, मद्रास के कुमार नामक एक युवक ने। इन कैलंडरों को लिखने में उसे ४८ दिन लगे। जिला कलेक्टर, रोटरी क्लब, लयन्स क्लब, जूनियर चांबर के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में कुमार ने इस बृहत कार्य को पूर्ण किया। उन प्रमुखों के दिये योग्यता-पत्रों के आधार पर उसने 'गिन्नीस बुक आफ रिकार्डस' में स्थान प्राप्त किया।

शाप-आशीर्वाद

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास लौट आया। पेड़ से शव को उतारा और अपने कंधे पर डाल लिया। चुपचाप श्मशान की ओर बढ़ने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा ''राजन्, घनघोर अंधकार है, भयानक श्मशान है, भय से कंपा देनेवाला वातावरण है। मेरी समझ में नहीं आता कि वह कौन होगा, जिसने इस श्मशान में ऐसे कठोर काम करने के लिए तुम्हें बाध्य किया; तुम्हें प्रेरित किया। कहीं वह व्यक्ति तुम्हारा गुरु तो नहीं, जिसके प्रति तुममें आदर की भावना कूट-कूटकर भरी हुई है। या कहीं वह तुम्हारा पिता तो नहीं, जिसे तुम बहुत चाहते हो, जिसके प्रति तुममें अपार प्रेम भरा हुआ है। क्योंकि गुरु और पिता कभी-कभी अपने शिष्य व पुत्र को अनालोचित ही कष्ट पहुँचाते हैं, परिश्रम करने पर मजबूर करते हैं। यद्यपि वे स्वयं ही शिष्य या पुत्र की तरह के अनुभवों से गुज़र चुके होंगे, पर

बैताल कथा

सही निर्णय न ले पाने की स्थिति में वे ऐसी ग़लती कर बैठते हैं। उदाहरणस्वरूप मैं तुम्हें बहुत बडे व्यापारी विश्वदत्त की कहानी सुनाऊँगा, जिसे अपनी थकावट दूर करते हुए सुनते जाओ।'' कहकर वह आगे यों बताने लगा।

सूर्यनगर में विश्वदत्त नामक एक बहुत बड़ा व्यापारी था। धनदत्त उसका इकलौता पुत्र था। वह अक़्लमंद था, पर था बड़ा ही चंचल व उतावला। पिता व्यापार करके कमाता था तो वह खूब खर्च करता और मज़े से दिन काटता रहता था। क्रमशः वह बुरी लतों का शिकार भी हो गया।

एक दिन विश्वदत्त ने अपने बेटे को बुलाकर कहा ''बेटे, कहते हैं कि सयाना बेटा मित्र के समान है। इसलिए मैं तुम्हें अच्छाई-बुराई के बारे में भाषण नहीं दूंगा। किन्तु मुझे इस बात का बहुत दुख है कि तुम जिस मार्ग पर जा रहे हो, वह तुम्हारा नाश करेगा। तुम्हारी बुद्धि तुम्हें पतन के रास्ते पर ले जा रही है। जो भी मांग रहे हो, मैं देता जा रहा हूँ। इससे तुम्हें धन का महत्व भी मालूम नहीं हो रहा है। आगे से अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए जो धन चाहिये, खुद कमाओ।''

धनदत्त ने पिता के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। उसे व्यापार में अभिरुचि थी, पर इसके लिए आवश्यक पूँजी पिता से लेना नहीं चाहता था। अपने व्यापारी मित्रों से अपनी इच्छा प्रकट की तो उन्होंने कहा कि व्यापार में भागीदार बनने के लिए आवश्यक पूँजी ले आओ। आख़िर उसे लाचार होकर, निर्लज्ज होकर अपने पिता से पूँजी मांगनी ही पड़ी।

विश्वदत्त ने उससे कहा ''हर कोई व्यक्ति व्यापार करने योग्य नहीं होता। जिसे व्यापार करना आता है, उसकी पूँजी है, उसकी अक़्लमंदी।''

''ज़रूरत पड़े तो मैं अपनी अक़्ल को ही पूँजी के रूप में उपयोग में ला सकता हूँ। पर मेरा बाप धनी है। आप मुझे एक हज़ार अशर्फ़ियाँ दीजिये। आप चाहें तो ऋणपत्र पर भी हस्ताक्षर करूँगा। ऋण व्याज सहित एक साल के अंदर लौटाऊँगा।'' धनदत्त ने कहा।

''तुम्हें अगर मुझसे धन चाहिये तो पहले अपनी अक़्लमंदी का सबूत दो। इसके लिए मुझे तुम्हारी परीक्षा लेनी होगी'' विश्वदत्त

ने आगे यों कहा "सूर्यनगर से आठ कोसों की दूरी पर रमणपुर नामक एक स्थल है। वहाँ करटक और दमनक नामक दो व्यक्ति रहते हैं। सब का कहना है कि उनके पास अद्‌भुत शक्तियाँ हैं। बताया जाता है कि नया धंधा शुरू करने के पहले उन दोनों में से किसी की भी सेवा-शुश्रूषा करने से उसका भला होगा। जो पाना चाहेगा, वह पाया जा सकता है।"

विश्वदत्त ने अपने बेटे से यह बात बतायी और कहा "तुम रमणपुर जाओ। छे महीने करटक और छे महीने दमनक की सेवा में लगे रहो। दोनों के आशीर्वाद पाओ। वापस आने के बाद बताओ कि इन दोनों में से कौन अच्छा है। तब मैं निर्णय कर पाऊँगा कि तुम कितने अक़्लमंद हो। बहुत से लोगों का कहना है कि करटक दुष्ट है और शाप देता है। उनकी दृष्टि में दमनक अच्छा आदमी है और आशीर्वाद देता है। लोगों की इस राय की सच्चाई को मैं तुम्हारे द्वारा जानना चाहता हूँ।"

धनदत्त ने पिता की बात मान ली और रमणपुर निकल पड़ा। पिता ने उसे एक दमडी भी नहीं दी। किन्तु उसने ऐसा प्रबंध किया, जिससे उसका नाम लेने पर उसे कुछ भी मिल सकता है।

धनदत्त पहले करटक के घर गया। जब उसने जाना कि धनदत्त उसके पास किस काम पर आया है तो उसने कहा "तुम मेरे सेवक नहीं, मित्र हो। मुझसे पूछकर अपने

संदेहों को दूर करते रहो। किन्तु एक बात का ख्याल रखना। मुझे कभी नाराज़ मत करना। मैं क्रोध में आकर गाली दूँगा तो हू ब हू वही होगा।"

राम करटक का बेटा था। दमयंती उसकी बेटी थी। उम्र में वे धनदत्त से बहुत ही छोटे थे। वे दोनों बहुत-सी बातें धनदत्त से पूछकर जानते रहते थे। धनदत्त जो भी कहता, वह उन्हें बड़ा ही अजीब और कुतूहलपूर्ण लगता था। जो भी वह कहता, वे उसका पूर्ण रूप से विश्वास करते थे। कुछ दिनों के बाद तो वे वही करते, जो धनदत्त कहता था। स्थिति यहाँ तक पहुँच गयी, मानों धनदत्त के बिना उनका कोई अस्तित्व ही नहीं।

करटक ने धनदत्त को बहुत-से व्यापार संबंधी सूत्र बताये। वस्तुओं का समीकरण

कैसे करना है, कौन-सी वस्तुएँ कहाँ बेचनी हैं, जनता को विश्वास कैसे दिलाना चाहिये आदि तरह-तरह की पद्धतियों को उसने उसे सिखाया। धनदत्त ने अब बहुत-से विषयों की जानकारी पायी। उसने एक दिन करटक से पूछा, "महोदय, आपसे मैंने बहुत-सी बातें सीखीं। किन्तु आपकी कही सारी बातों को अमल में ले आना हो तो न्याय, सच्चाई, ईमानदारी को बहुत दूर रखना होगा। अधर्म को अमल में ले आना होगा। इनसे बचने के लिए अलावा इसके, क्या कोई और रास्ता है?"

"व्यापार में सफल बनना हो तो झूठ बोलना पड़ेगा। अपनों को भी धोखा देना पड़ेगा। अच्छाई का नाटक करना होगा। ईमानदारी को तो बिल्कुल भुला देना चाहिये। हाँ, इस बात में सतर्क रहना आवश्यक है कि सरकार की पकड़ में न आवें।" करटक ने कहा।

धनदत्त को गुरु की बातें सच और सही लगीं। एक दिन शाम को उसने राम और दमयंती को यह बात बतायी। वे बहुत ही खुश हुए और दोनों ने एक साथ कहा कि हम भी बड़े होकर व्यापार करेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि अभी से वे इन पद्धतियों को सीखते जाएँगे।

अपने बच्चों में होते हुए परिवर्तनों को करटक देखता रहा। उसने उनसे एक दिन पूछ ही लिया कि उनके बरताव में ऐसी तब्दीली क्यों हुई। अब सच्चाई जान ली। उसने धनदत्त को बुलाया और कहा "मैं तुम्हें अच्छी सलाहें देकर तुम्हारी सहायता कर रहा हूँ और तुम बुरी सलाहें देकर मेरे बच्चों को बिगाड़ रहे हो। मेरे साथ बड़ा अन्याय कर रहे हो।"

धनदत्त ने कहा "आपने मुझे जो सलाहें दीं, उनको भी वही बतायीं। भला वे बुरी कैसी हो सकती हैं?"

करटक ने नाराज़ी से कहा "व्यापार दगा, धोखा, साजिश से भरा है। इसलिए मैं नहीं चाहता कि भविष्य में मेरे बच्चे व्यापार करें।"

"व्यापार अगर दगा, धोखा व साजिश से भरा है तो मुझे क्यों सावधान नहीं किया?" धनदत्त ने चिढ़ते हुए पूछा।

"तो सुनो। इस संसार को व्यापारियों की बड़ी ही ज़रूरत है। इसलिए दूसरों को मैं व्यापार करने के लिए प्रोत्साहित करता

हूँ। पर मेरे बच्चों का व्यापारी बनना मुझे क़तई पसंद नहीं। अब उनकी विचार-पद्धति में परिवर्तन लाना तुम्हारा कर्तव्य है।'' करटक ने गंभीरतापूर्वक कहा।

''अपने बच्चों के लिए एक और दूसरों के लिए अलग इंसाफ़ की आपकी नीति मुझे बिल्कुल पसंद नहीं आयी। जब संसार को व्यापारियों की आवश्यकता है तो आपके बच्चे भी व्यापारी बनें।'' धनदत्त ने कहा।

धनदत्त की दलील पर करटक एकदम आग बबूला हो उठा और बोला, ''मूर्ख, आगे कभी भी अपना चेहरा मुझे मत दिखाना। मैं शाप देता हूँ कि अब से हर दिन तेरा अशुभ हो।''

धनदत्त लापरवाही से हँसते हुए वहाँ से चल पड़ा। किन्तु गली में क़दम रखा कि नहीं, केले के छिलके पर पैर रखने के कारण वह ज़मीन पर गिर गया। बेचारा उठ भी नहीं पाता था तो राह चलते एक आदमी ने उसपर तरस खाकर उसे उठाया और वैद्य के पास ले गया। वैद्य ने उसके पैर की मोच पर पत्तों का रस घोला और उससे पूछा कि ऐसा कैसे हुआ? धनदत्त ने पूरा विवरण दिया।

''बाप रे, करटक ने तुम्हें शाप दिया। यह तो बहुत बुरा हुआ। हर दिन तुम्हें कोई न कोई खतरा मोल लेना पड़ेगा। उनकी शरण में जाओ और क्षमा माँगो'' वैद्य ने सुझाया।

''मैं शापों में विश्वास नहीं रखता। बहुत ही हठी हूँ। ज़रूरत पड़े तो हर रोज़ आपके यहाँ आऊँगा और वैद्य करावूँगा। उनसे क्षमा माँगने का सवाल ही नहीं उठता।'' धनदत्त ने कहा।

वैद्य ने सोचकर कहा ''विश्वदत्त की आज्ञा के अनुसार मैं तो तब तक तुम्हारा वैद्य करूँगा ही, जब तक तुम चाहते हो। किन्तु, व्यर्थ अपना स्वास्थ्य क्यों ख़राब करते हो। मेरी बात मानो। दमनक के आश्रय में जाओ। तुम्हें वहाँ कोई तक़लीफ़ नहीं होगी।''

''हाँ, मैं अब दमनकजी के यहाँ ही जा रहा हूँ। क्या वे मुझे अपना शिष्य बनाएँगे।'' धनदत्त ने अपना संदेह प्रकट किया।

''सड़क से उठाकर तुम्हें यहाँ लानेवाला कोई और नहीं, स्वयं दमनक हैं। वे परोपकारी हैं। सबका आदर करते हैं। आशीर्वाद ही देते हैं, शाप देना तो जानते

मासूमों को ठगकर पैसे ऐंठना आदि व्यापार में सहज है। इसीलिए मैं व्यापार में तुम्हारा भागीदार बन रहा हूँ।''

धनदत्त को, दमनक की बातें अच्छी लगीं। उसने तुरंत व्यापार करना शुरू कर दिया। शायद दमनक के आशीर्वाद के कारण उसका व्यापार बहुत ही लाभदायक रहा। चार ही महीनों में वह खूब कमाने लगा।

दमनक ने, पूँजी के रूप में धनदत्त को हज़ार अशर्फ़ियाँ दीं। पहले महीने में उसे पाँच सौ अशर्फ़ियों का लाभ हुआ। उसमें से आधा दमनक को दिया। दूसरे महीने उसे हज़ार अशर्फ़ियों का लाभ हुआ। उसमें से आधा दमनक को दिया। यों हर महीने यही सिलसिला ज़ारी रहा।

ही नहीं'' वैद्य ने कहा।

धनदत्त, दमनक के घर गया। अपना परिचय दिया और जो हुआ, सब बताया।

दमनक ने उससे कहा ''पुत्र, व्यापार में प्रजासेवा व परोपकार हैं। किन्तु अनुभव के आधार पर ही उसमें सफलता मिल सकती है। तुम यहीं व्यापार शुरू करो। पूँजी मैं लगाऊँगा। लाभ आपस में आधा-आधा बाँट लेंगे। क्या तुम्हें स्वीकार है?''

दमनक की बातों पर धनदत्त को आश्चर्य हुआ। उसने कहा ''महाशय, मैंने सुना कि आप बहुत अच्छे आदमी हैं। व्यापार करने क्यों मुझे प्रोत्साहित कर रहे हैं?''

दमनक ने हँसकर कहा ''वैद्य चिकित्सा के लिए धन लेता है। गायक गाना गाकर रक़म लेता है। व्यापारी वस्तुएँ देकर पैसे वसूल करता है। आहार-पदार्थों में मिलावट,

चार महीनों के बाद धनदत्त ने एक विषय जाना। इस कम अवधि में ही दमनक को उससे पंद्रह सौ अशर्फ़ियाँ मिलीं। दमनक बीस प्रतिशत के हिसाब से ही सही, कर्ज़ देगा तो साल भर में उसे बारह सौ अशर्फ़ियाँ ही मिलतीं।

धनदत्त ने एक दिन दमनक से कहा ''महाशय, आपने जो पूँजी लगायी, उसका भी ब्याज आपको मिल गया। आगे से मेरे व्यापार में हिस्सा मत माँगिये।''

दमनक ने नाराज़ होते हुए कहा ''हम व्यापार में भागीदार रहेंगे। पूँजी मेरी है और लाभ दोनों में समान। इस समझौते में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। जब तक तुम्हारा व्यापार चालू है, तब तक

लाभ में मेरा हिस्सा मुझे मिलता ही रहेगा, मिलना चाहिये ।'' उसने स्पष्ट शब्दों में कह दिया ।

''हमारे समझौते में निहित धोखेबाज़ी अब मेरी समझ में आ गयी । भाग्यवश हमने उस दिन कोई लिखा-पढ़ी नहीं की । इसलिए हमारे समझौते का कोई सबूत नहीं हैं । आगे से आपका चेहरा देखना भी मैं पसंद नहीं करूँगा ।'' धनदत्त ने तैश में आकर कह दिया ।

''तब आज से तुम जो-जो कष्ट झेलोगे, उनका जिम्मेदार मैं नहीं हूँ'' दमनक ने कहा ।

दोनों वहाँ से निकल पड़े । धनदत्त सड़क पर आया कि नहीं, फिर से केले के छिलके पर क़दम रखा और फिसल गया । उसे वैद्य के पास कोई ले गया । वैद्य ने एक और बार पत्तों को निचोड़कर उनका रस उसकी मोच पर घोला और कहा ''करटक और दमनक दोनों की बातों में बल है; वाक्शुद्धि हैं । पर यह इस रमणपुर तक ही सीमित है । अच्छा यही होगा कि तुम तुरंत यह पुर छोड दो और अपने यहाँ लौट चलो ।''

धनदत्त सूर्यनगर लौटा और सारा वृत्तांत अपने पिता को सुनाता हुआ बोला ''करटक और दमनक दोनों स्वार्थी हैं, दुष्ट हैं, दोनों ने मुझे शाप दिया ।''

विश्वदत्त ने कहा ''मैं जान गया कि तुम कितने अक़्लमंद हो । तुम खेती करने या पशु-पोषण के ही लायक़ हो । तुम

व्यापार करने के लायक़ नहीं हो ।''

बेताल ने विक्रमार्क को यह कहानी सुनाकर कहा ''राजन्, विश्वदत्त का अपने बेटे से यह कहना कि तुम व्यापार करने के लायक़ नहीं हो, असंगत व अनुचित लगता है । उसका यह निर्णय मेरी दृष्टि में ज़ल्दबाजी में लिया गया निर्णय है । अपने स्वानुभव से धनदत्त ने जाना कि करटक और दमनक दोनों स्वार्थी और दुष्ट हैं । जब दोनों ने जान लिया कि धनदत्त से उन्हें कुछ लेना-देना नहीं है, वह निष्फल है, तो दोनों ने उसे दुतकारा और शाप दिया । किन्तु विश्वदत्त की बातों से लगता है कि उन दोनों में से एक अच्छा है । दुष्ट तो दुष्ट ही होते हैं क्योंकि दुष्टता उनकी मौलिक प्रवृत्ति है । उनमें से किसी को अच्छा दुष्ट कहना और किसी को बुरा दुष्ट

कहना असंबद्ध है, अटपटा है, खोखला है। कोई माने नहीं रखता। विश्वदत्त जैसे प्रतिभाशाली व्यापारी ने भी अपने बेटे के बारे में इतनी बड़ी ग़लती क्यों की? मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी नहीं दोगे तो तुम्हारा सिर टुकड़ों में फट जायेगा।''

विक्रमार्क ने उसके संदेहों को दूर करते हुए कहा ''इसमें कोई संदेह नहीं कि करटक दुष्ट है। जिस विषय को वह बुरा मानता है, उसे दूसरों को सिखाना चाहता है और अपना प्रयोजन निकालना चाहता है। किन्तु दमनक की बात अलग है। वह जो कहता है, अमल में लाता है। व्यापार में धनदत्त के सामर्थ्य को जाने बिना ही उसने उसे हज़ार अशर्फ़ियाँ दीं। यह हुई, उसके भलमानस होने का सबूत। उसके आशीर्वाद के बल पर ही धनदत्त व्यापार में सफल हुआ और खूब कमाया। सच कहा जाए तो करटक, दमनकों में से धनधत्त को शाप देनेवाला करटक ही है। जिस क्षण से धनदत्त ने दमनक से परिचय आप किया, उस क्षण से उसी के आशीर्वाद ने करटक के शाप से उसे बचाया। किन्तु प्रलोभन के वश हो धनदत्त ने लाभ का आधा भाग दमनक को देने से इनकार कर दिया और कहा भी कि आगे आपका चेहरा भी नहीं देखूंगा। यों उसका अपमान भी किया। दमनक ने उसे आशीर्वाद देना छोड़ दिया। फलस्वरूप दूसरे ही क्षण पैर फिसलकर वह गिर गया। उसने इसका कारण जानने की कोशिश भी नहीं की। अनुभव-शून्य तथा सही निर्णय लेने की क्षमता के अभाव में उसने दोनों को दुष्ट ठहराया। इससे विश्वदत्त जान गया कि उसके बेटे में अच्छे व्यापारी बनने के लक्षण नहीं हैं। न ही उसमें बुद्धि-कौशल है या न ही व्यापार-दक्षता। उसने घोषित कर दिया कि वह खेती करे या पशु-पोषण करे।''

राजा के मौन-भंग में सफल बेताल शव सहित ग़ायब हो गया और पेड़ पर जा बैठा।

आधार : सीमा वाजपेयी की रचना

कर्नाटक की ओर

आलेख : मीरा नायर ◆ चित्र : गौतम सेन

गोवा के तट पर दक्षिण की ओर बढ़ने पर हम मारगाव पहुंचते हैं, जो कि भारत के सर्वोत्तम प्राकृतिक बंदरगाहों में से एक है. बहुत व्यस्त बंदरगाह भी है यह. काफी माल यहां से निर्यात होता है. गोवा के मैंगनीस और लोहे के अयस्क इनमें मुख्य हैं.

मारगाव से तनिक दूर कोल्वा है, जोकि गोवा का सबसे लंबा बालू-तट (चौपाटी) है. यहां से काबो डि रामा तक सफेद रेत बिछी हुई है. ऐसी मान्यता है कि राम ने वनवास के कुछ वर्ष यहां पर बिताये थे. २५ कि.मी. लंबे इस बालू-तट के बीचों-बीच स्थित है बेनौली. कहते हैं कि राम का एक बाण यहां गिरा था.

इग्रेजा डि नोसा सेन्होरा डि प्येडाडे बड़ा मशहूर गिरजा है, जो कोल्वा तट पर बना है. उसमें मेनिन (शिशु) यीशु की प्रतिमा है. इस मूर्ति में रोगियों को चंगा करने की चमत्कारी शक्ति बतायी जाती है.

पोलेम गोवा का सबसे दक्षिणी बालू-तट है. इस रमणीय, एकांतपूर्ण, साफ-सुथरे स्थान से गोवा और कर्नाटक की सीमा तनिक ही दूर है.

कोल्वा बालू-तट

कर्नाटक के तटीय क्षेत्र के बारे में भी यही मान्यता है कि भगवान परशुराम ने उसे अरब सागर से प्राप्त किया था. इसीलिए उसे परशुराम क्षेत्र कहा जाता है.

कर्नाटक के उत्तरी छोर पर स्थित कारवार अरब सागर के तट पर सबसे सुंदर स्थानों में से एक है. उत्तर कन्नड जिले का यह प्रमुख शहर तीन ओर से बालू-तटों से घिरा हुआ है.

कारवार में बहुत अच्छा प्राकृतिक बंदरगाह भी है. दक्षिण-पश्चिमी मानसून से सुरक्षित इस बंदरगाह का उपयोग मुंबई (बंबई) से कोलंबो जानेवाले समुद्री जहाज सारे साल करते हैं. अरब लोग इसे बैत-अल-कोल के नाम से जानते थे. यहां से काली मिर्च, इलायची, तेजपात, डुंगारी नाम का नीले रंग का मोटा सूती कपड़ा और मलमल (मस्लिन) निर्यात होते थे.

कारवार

सन १८८३ में रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपना पहला गीत-नाटक 'प्रकृतीर प्रतिशोध' यहीं पर लिखा था. तब वे बाईस वर्ष के थे और अपने बड़े भाई सत्येन्द्रनाथ ठाकुर के पास ठहरे थे, जो यहां जिला न्यायाधीश थे. सत्येन्द्रनाथ प्रथम भारतीय आई.सी.एस. अफसर थे.

कारवार से चंद कि.मी. दक्षिण में अंकोला का प्राचीन बंदरगाह है, जो कदंब, चालुक्य और विजयनगर राज्यों के समय व्यापार और वाणिज्य का महत्वपूर्ण केंद्र था. आजादी की लड़ाई में अंकोला की शानदार भूमिका रही. यहां नमक सत्याग्रह और करबंदी आंदोलन हुए थे.

होन्नेबैल की प्रसिद्ध जैन गुफाएं अंकोला से केवल आठ कि.मी. दूर हैं.

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

आजादी की लड़ाई में अंकोला ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया था.

महाबलेश्वर मंदिर

चंदन की मूर्ति

'दक्षिण की काशी' कहलानेवाला गोकर्ण कारवार से ६० कि.मी. की दूरी पर है. यह शैवों का पवित्र तीर्थ है. यहां के महाबलेश्वर मंदिर के 'आत्मलिंग' का दर्शन करने दूर-दूर से शिवभक्त आते हैं. ऐसी मान्यता है कि यह लिंग रावण ने लंबी तपस्या के बाद प्राप्त किया था. गणेश ने चालाकी से उसे जमीन पर रखवा दिया. जब रावण ने उसे दुबारा उठाने की कोशिश की तो वह उसे उठा नहीं सका. रावण को उसे यहीं छोड़ जाना पड़ा. तब से इस लिंग की पूजा 'महाबल' के नाम से होने लगी. प्रायः बारह साल में एक बार यहां 'अष्टबंध' का उत्सव होता है. उस समय मिट्टी हटा कर पूरा लिंग भक्तों को दिखाया जाता है.

नारियल के वृक्षों से शोभित तट के साथ-साथ आगे बढ़ने पर आप कुमटा पहुंचेंगे, जो चंदन की कारीगरी के लिए मशहूर है. यह काम करनेवाले पुश्तैनी कलाकार 'गुडिगार' कहलाते हैं.

यहां से कुछ ही आगे आता है होन्नावर. इसका पुराना नाम 'होन्नूरु' (सोने का शहर) था और यहां के लोग इसे रामायणकालीन बताते हैं. यहां 'रामतीर्थ' नाम का कुंड है, जो राम का बनाया हुआ माना जाता है. होन्नावर हैदर अली के समय समृद्ध शहर और चहल-पहल भरा बंदरगाह था. यहां शरावती नदी पर बना हुआ पुल कर्नाटक में सबसे लंबा पुल है.

नक्काशी करता हुआ गुडिगार

शरावती का पुल

चंद्रनाथेश्वर बसदी में तीर्थंकर चंद्रनाथ की मूर्ति

संपेरा : भटकल के एक जैन मंदिर में उत्कीर्ण मूर्ति

उत्तर कन्नड जिले के दक्षिणी छोर पर भटकल है, जो बसदियों (जैन मंदिरों) के कारण मशहूर है. कम से कम १३ बसदियां यहां हैं. उनमें से सबसे बड़ी है ५०० वर्ष पहले निर्मित चंद्रनाथेश्वर बसदी.

भटकल से छह मील दूर, घने जंगल से ढका नेत्राणी टापू है. कभी यहां कबूतरों की बहुतायत थी, जिससे अंग्रेज इसे 'पिजन आइलैंड' कहने लगे. बतासी जैसा एक पक्षी स्विफ्टलेट भी यहां बहुत मिलता है.

यहां से और दक्षिण में कुंदापुर है. यक्षगान लोकनाट्य की उत्तरी शैली 'बडगतट्टु' का यह बहुत बड़ा केंद्र है.

कन्नड के साहित्यकार 'मुद्दण,' जिनका असली नाम नंदलिके लक्ष्मीनारणप्पा था, इस सदी के आरंभ में यहीं के सरकारी हाइस्कूल में व्यायाम-शिक्षक थे. मध्ययुगीन कन्नड गद्य में लिखा उनका 'रामाश्वमेधम्' काव्य अमर हो गया है.

यक्षगान का एक सजा-धजा 'पात्रधारी'

बड़ा

धवलगिरि गाँव के संपन्न किसानों में से नरसिंह एक था। उसका इकलौता बेटा था परमेश। बगल के ही गाँव में जो गुरुकुल था, उसमें पाँच सालों तक विद्याभ्यास करके अभी-अभी लौटा था। कृषि-कार्यों में वह अपने पिता की सहायता करता था।

ऐसे तो परमेश स्वभाव से अच्छा था, पर दूसरों से बातें करते समय अपने बारे में बढ़ा-चढ़ाकर कहता रहता था। उसके पिता ने उसे बहुत बार समझाया भी कि इस प्रकार से बातें करना ठीक नहीं। किन्तु उसने पिता की बातों का खंडन करते हुए कहा "जिन गुणों का मुझमें लोप है, उनके बारे में बढ़ा-चढ़ाकर कहूँ तो गलत है। जो भी बातें मैं कह रहा हूँ, वे सब मैंने गुरुकल में सीखीं। उन्हें अच्छी तरह मैंने पचा लिया है। इसलिए मैं जो भी कह रहा हूँ, वास्तविक हैं। उनमें कोई अतिशयोक्ति नहीं।"

बेटे से वाद-विवाद करना उसे अच्छा नहीं लगता था, इसलिए मौन रह जाता था। पर उसे बेटे के स्वभाव पर दुख होता था।

नरसिंह एक बार किसी काम पर अपने साले शिव से मिलने पड़ोसी गाँव में गया। तब बातों-बातों में उसने अपने बेटे के शुष्क तर्क का ज़िक्र किया और अपना दुख प्रकट किया।

शिव ने कहा "उसके बारे में व्यर्थ ही चिंतित मत होना। उसे एक बार मेरे पास भेजो। उसके इस काले धब्बे को मैं मिटा दूँगा और उसे बताऊँगा कि असली बड़प्पन होता क्या है।"

नरसिंह ने घर लौटने के बाद बेटे परमेश से कहा "शिव मामा ने तुम्हें अपने यहाँ आने को कहा है। तुमसे कुछ ज़रूरी बातें करना चाहता है।" परमेश शिव से मिलने निकला।

सुचित्रा

परमेश, शिव को बहुत मानता था। उसके प्रति उसमें आदर की भावना थी। भानजे से इधर-उधर की बातें करने के बाद शिव ने, परमेश से पूछा "शहर के बड़े व्यापारी गोविंद गुप्ता को जानते हो?"

परमेश ने कहा कि मैं उसे नहीं जानता। तब शिव ने कहा "मेरा भी उनसे परिचय नहीं। अब उनसे एक काम आ पड़ा है। तुम्हें अपने साथ ले जाऊँ और उनसे परिचय करा दूँ तो हो सकता है, भविष्य में वह तुम्हारे लिए लाभदायक सिद्ध हो। इसीलिए मैंने तम्हें बुलाया। कल ही हम दोनों शहर जाएँगे।"

"क्या वह इतना बड़ा है कि मैं उससे अपना परिचय कराऊँ? जो भी हो, समझ लेना, आपका काम हो गया। अनजाने लोगों से बातें करके अपना काम बना लेने में मेरी बराबरी का कोई है ही नहीं।" परमेश ने फिर से अपना बड़प्पन जताया।

उसकी बातों पर शिव ज़ोर से हँस पड़ा और कहा "अच्छा, ऐसी बात है। जो भी हो, किसी न किसी तरह अपना काम पूरा कर लेना ही मेरा आशय है।"

दूसरे दिन सबेरे-सबेरे किराये की बैल-गाड़ी में बैठकर मामा और भानजा शहर निकले। शहर पहुँचने के बाद शिव ने गाड़ी को एक जगह पर रुकवाया और परमेश से कहा "गोविंद गुप्ता का घर यहीं कहीं है।" गाड़ीवाले को किराया देकर भेज दिया और सामने से तरकारियों की टोकरी को सिर पर रखे आती हुई औरत से उसने पूछा "जानती हो, गोविंद गुप्ता का घर कहाँ है?"

उस औरत ने कहा "उस धर्मराज का घर कौन नहीं जानता। शहर के किसी भी बच्चे से पूछो। उनका घर दिखायेगा। वे दयालू और धर्मात्मा हैं। इस गाँव में कोई भी ऐसा नहीं, जिसने उनसे सहायता प्राप्त न की हो। मेरी ही बात लीजिये, मेरा पति एक दुर्घटना में मर गया। इस संसार में मेरा कोई न रहा। अपना पेट भरने की स्थिति में नहीं थी। उन्होंने ही मुझे एक सौ अशर्फ़ियाँ दीं। और जीने का मार्ग सुझाया। आज तरकारी बेचकर अपनी जीविका चला रही हूँ।" फिर उसने बताया कि उसका घर कहाँ है।

उसके बताये घर की तरफ़ गली में जब वे जाने लगे तो सामने से आते हुए एक

महाशय को रोककर शिव ने पूछा कि गोविंद गुप्ता का घर कहाँ है? उस महाशय ने बड़े ही प्यार से घर का पता बताया और पूछा "क्या मैं जान सकता हूँ, आप कौन हैं ?"

दीन-स्वर में उत्तर देते हुए शिव ने कहा "हम पड़ोसी गाँव के हैं। कुछ कष्टों में फँसे हुए हैं। गुप्ता के दर्शनार्थ आये हैं। सुना है कि वे बहुत ही दयालु और धर्मात्मा हैं। उनसे सहायता माँगने उनसे मिलने जा रहे हैं।"

उस महाशय ने और आदर दिखाते हुए कहा "यह बात है? गोविंद गुप्ताजी से मिलने से आपके सब कष्ट दूर हो जाएँगे। समझिये, आपका काम हो ही गया। ऐसा दयालू तो ढूँढ़ने पर भी कहीं नहीं मिलेगा। उजड़े मेरे व्यापार को संवारनेवाले महान वे ही है। उन्होंने ही मुझे आर्थिक सहायता पहुँचायी और मुझे उबारा।"

शिव ने उसे प्रणाम किया और आगे बढ़ा। पाँच मिनिटों में वे गोविंद गुप्ता के घर पहुँचे।

मामा और भानजा जब वहाँ पहुँचे, तब गोविंद गुप्ता वहाँ उपस्थित तीन सज्जनों से बाते कर रहा था। शिव को देखते ही गुप्ता उठ खड़ा हुआ और आगे बढ़कर उनका स्वागत किया। "पधारिये, इधर बहुत दिनों से आप आये ही नहीं।" बड़े प्यार से उसने पूछा।

इस प्रश्न को सुनते ही परमेश का चेहरा फीका पड़ा गया, परंतु शिव ने मुस्कुराते हुए कहा "तबीयत ठीक नहीं थी, इसलिए
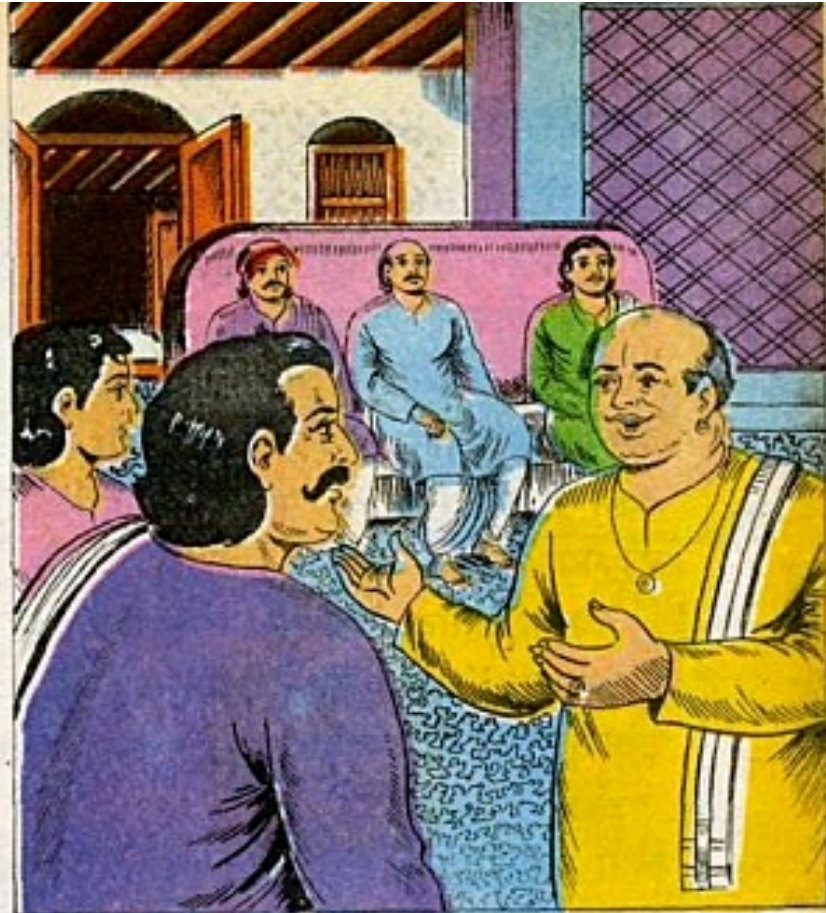
आ नहीं सका। आप कुशल है ना?"

गोविंद गुप्ता ने मुस्कुराते हुए उन्हें बिठाया। वहाँ उपस्थित तीन आदमियों से एक आदमी ने इशारे से शिव से पूछा कि ये कौन हैं?

"यह ? यह मेरा भानजा है। नाम परमेश है।" शिव ने कहा। "अच्छा, यह वही परमेश है। मेरा लड़का जब गुरुकुल में विद्याभ्यास करता था, तब इसे मैंने वहाँ देखा। सुना कि यह अपने को बहुत बड़ा मानता है। इसका दावा है कि मुझ जैसा महान आसपास के किसी भी गाँव में है ही नहीं। इस हिसाब से आपका भानजा हमारे गुप्ताजी से महान है। है ना?" उसकी बातों में सत्य से भरा व्यंग्य कूटकूटकर भरा था। परमेश के दिल को उसकी बातों ने चोट पहुँचायी। बाद बहुत देर तक शिव

उससे बातें करता रहा, पर परमेश चुप बैठा रहा। सबने मिलकर खाना खाया। थोड़ी देर आराम करने के बाद मामा और भानजा निकल पड़े।

वापसी यात्रा में परमेश को एकदम चुप देखकर हँसते हुए शिव ने पूछा "हम जिस काम पर गये, क्या वह सफलतापूर्वक संपूर्ण हो गया?"

उसके जवाब में परमेश ने सिर झुकाते हुए कहा "आपने जिस काम का बीड़ा उठाया, वह अवश्य ही सफल हुआ।"

शिव ने नाटकीय ढंग में पूछा "मैंने किस काम का बीड़ा उठाया। बताना तो सही।"

परमेश ने धीमे स्वर में कहा "अपने आपको बड़ा न मानूँ, बड़ी-बड़ी बातें न करूँ, यह सिखाने मुझे आप शहर ले गये।

गोविंद गुप्ता यद्यपि आपका मित्र है, पर आपने ऐसा अभिनय किया, मानों आप उसे जानते ही नहीं। रास्ते से गुज़रते हुए हर एक से उसके घर का पता पूछते रहे। आप चाहते थे कि मैं उनके मुँह से गुप्ता की प्रशंसा सुनूँ। फिर मुझे उस गुप्ता के पास ले गये, जो आडंबर-हीन है और अपने बारे में भूलकर भी बात ही नहीं करता। वहाँ उपस्थित व्यक्ति के ताने ने मुझे सावधान कर दिया। जो भी हुआ, अच्छा ही हुआ। मेरी आँखें खुल गयीं।"

शिव ने परमेश की पीठ को प्यार से थपथपाते हुए कहा "मनुष्य का मूल्य बढ़ता है उसके कर्मों से, बातों से नहीं। तुम अच्छे काम करोगे तो समाज में तुम्हारा आदर होगा, सब तुम्हारी तारीफ़ करेंगे। बड़ा माना जाना सबके बस की बात नहीं है। ऐसे लोग करोड़ों में एक होते हैं। किन्तु अपने व्यवहार के द्वारा इतना तो कहलवाना आसान है कि फ़लाना अच्छा व विवेकी है।"

परमेश ने अपने मामा की बातें गौर से सुनीं। अपना अविवेक जाना। इसके बाद वह कभी भी अपने को बड़ा मानने नहीं लगा। विनयी होकर प्रेम से सबसे अच्छा बरताव करने लगा और अच्छा कहलाया जाने लगा।

चन्दामामा
सुवर्ण रेखाएँ
मृत्यु-गुफ़ा
युवराज उदयन को भयानक घोरी जाति के लोगों ने पकड़ा।
अरे, यह क्या, मुझे दिखायी नहीं दे रहा है।
मेरी मंत्र-शक्ति ने तुझे अंधा बना दिया। सूर्यास्त तक तुम्हारी मृत्यु होगी।
उलझनों से भरी यह राह तुम्हें गुफ़ा के उस पार स्थित जलपात के पास ले जायेगी। वही तुम्हें बचाने की शक्ति रखता है। जाओ।
युवराज ने साहसपूर्वक मृत्यु की गुफ़ा में प्रवेश किया।
गुरु के बताये रहस्य-सूत्र का उसने स्मरण किया।
अंधे को केवल इतना ही करना है।
वह रहस्य-सूत्र क्या है?
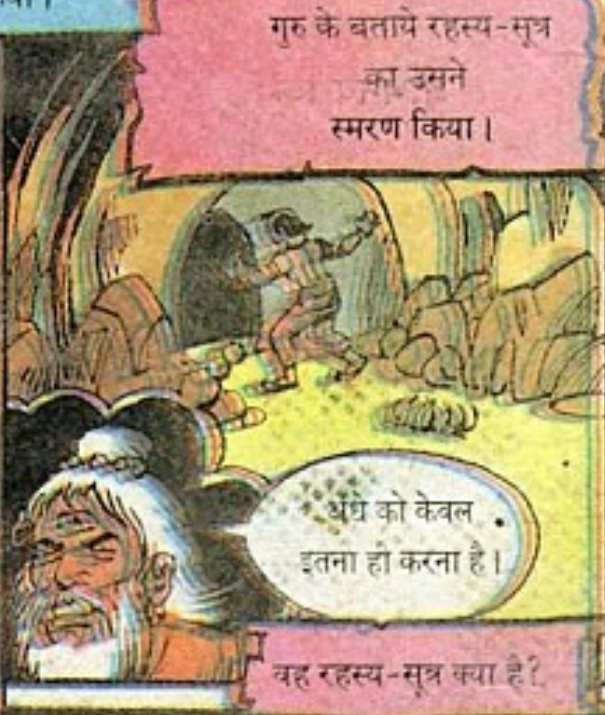
'चन्दामामा' की
सुवर्ण रेखाएँ
प्रश्नावली
१. पिछली शताब्दी में फ्रेंच के जंतु-शास्त्रज्ञ हेनरी मौ हाट ने एक दिन कंबोडिया में तितली का परिशीलन करते हुए एक महानगर के शिथिल भागों को पाया, जहाँ सुविशाल साम्राज्य की राजधानी थी। उस नगर का क्या नाम है? वहाँ प्रकटित मूर्ति का क्या नाम है?
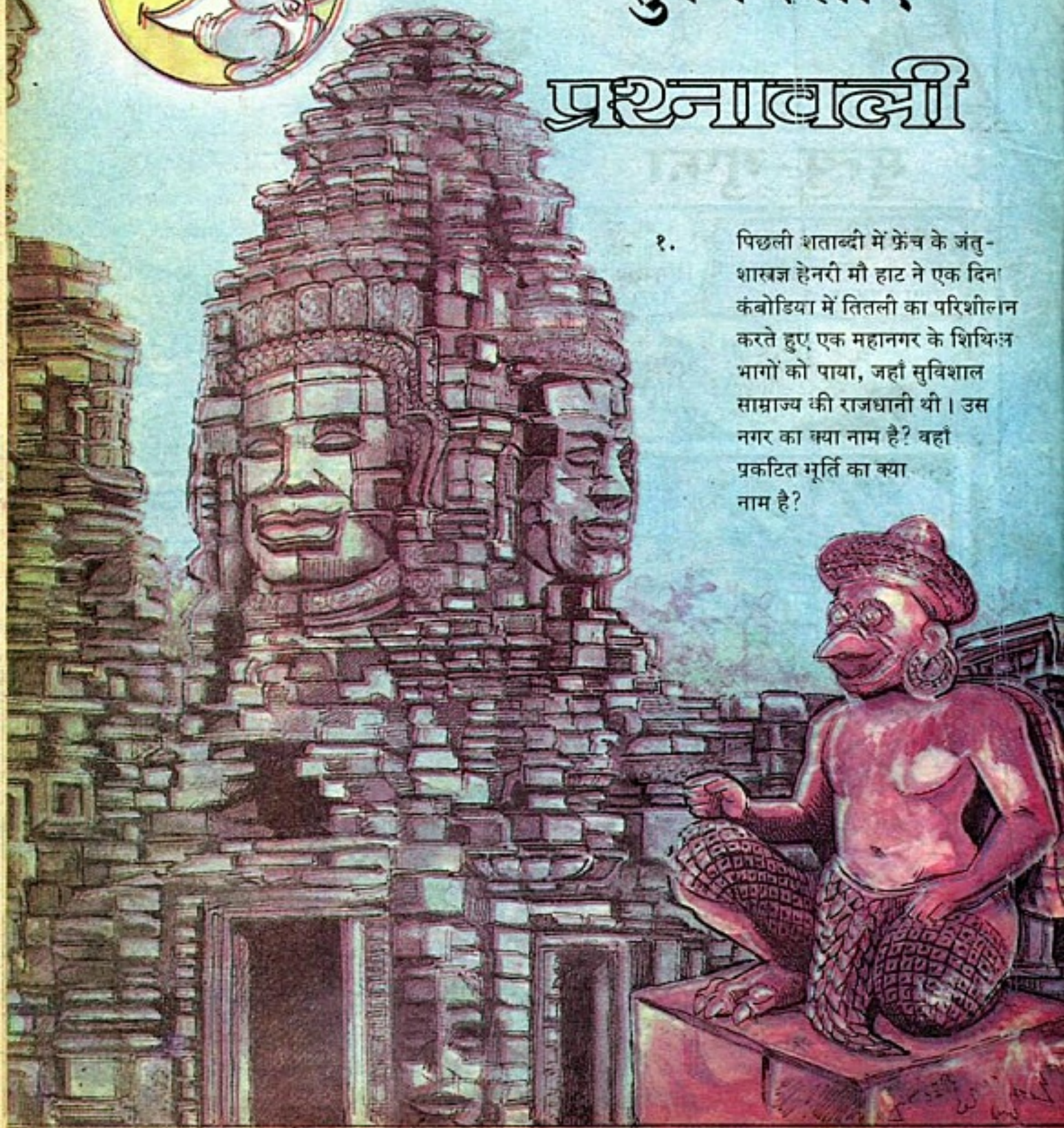
२.

पुर्तगालियों ने जब इस पक्षी को देखा, तब उन्हें यह बड़ा ही मूर्ख लगा। इसलिए उन्होंने इसका नाम रखा 'ट्रो ट्रो' (पागल चेहरेवाला) यह पक्षी किस प्राँत में है ?

४.

महाराष्ट्र के ग्रामों में प्रसिद्ध इस लोकनृत्य का क्या नाम है?

३.

इस क्रम में आगे क्या आयेगा ?

५.

अंडमान का यह शिकारी किसे अपना निशाना बना रहा है?

६.

नाव से लटकती हुई यह मूर्ति पानी को छू रही है। नदी का पानी हर दस मिनिटों में १० सें.मी. के हिसाब से ऊपर उमड़ रहा है। मूर्ति की ऊँचाई है एक मीटर। एक घंटे के बाद मूर्ति का कितना भाग पानी में होगा।

पांडा
को कतरिये
इस तस्वीर को बड़ा करके (जेराक्स करा सकते हैं) बिंदियों की रेखा के साथ-साथ एक चिकने काग़ज़ पर चिपकाइये।
विश्व की प्रकृति-निधि का चिन्ह है जैंट पांडा
तस्वीर को कतरकर रेखाओं के द्वारा तह करने पर, यहाँ जिस प्रकार पांडा बैठा हुआ हैं, ऐसे पांडा को तैयार कर सकते हैं।
तीन आसान क्रमों में कुत्ते के पिल्ले की तस्वीर खींचिये।

महाभारत

धर्मराज ने जुए में द्रौपदी को भी खो दिया। खोने के लिए अब उसके पास कुछ बचा भी नहीं था।

दुर्योधन गरजा ''द्रौपदी को बुलाइये। उसके हाथों इस सभा को साफ़ करवाना है।''

असहनशील हो विदुर ने दुर्योधन से कहा ''मूर्ख, अपनी सीमाएँ लांघ रहे हो। जो मुँह में आता है, बक रहे हो। पाँडवों को क्रोधित करना विषसर्पों को भड़काने के समान है। द्रौपदी तुम्हारी दासी कैसे बनी? अपनी स्वच्छंदता खोने के बाद ही धर्मराज ने द्रौपदी को दाँव पर लगाया।'' फिर सभा की ओर मुड़कर उसने कहा ''यह दुर्योधन मूर्ख है। मेरी बातें वह न ही सुनेगा, न ही मानेगा। निकट भविष्य में ही कौरवों का नाश निश्चित है।'' दुर्योधन ने विदुर की बातें अनसुनी कर दीं और प्रातिकामि नामक एक व्यक्ति को बुलाकर उससे कहा ''तुम तक्षण ही अंत:पुर जाओ और द्रौपदी को ले आओ। इन पाँडवों से तुम्हें ड़रने की कोई ज़रूरत नहीं।''

दुर्योधन की आज्ञा के अनुसार प्रातिकामि अंत:पुर गया और कहा ''देवी पांचाली, आपके पति धर्मराज ने जुए में आपको खो दिया। दुर्योधन ने यह बाज़ी जीती और अब आप उनकी दासी हैं। उनकी आज्ञा है कि अभी आप धृतराष्ट्र के घर पहुँचें।''

''क्या कोई क्षत्रिय अपनी पत्नी को दाँव पर लगाता है? कभी नहीं। क्या कहीं धर्मराज की मति भ्रष्ट तो नहीं हो गयी?

जुआ

जो हुआ, सविस्तार बताओ'' द्रौपदी ने पूछा ।

''धर्मराज ने जुए में सब कुछ खो दिया । बाजी लगाने उनके पास कुछ और बचा नहीं था । अपने को, अपने भाइयों को और आख़िर आपको भी जुए में खो दिया ।'' प्रातिकामि ने कहा ।

द्रौपदी ने कटु स्वर में उससे कहा ''जाओ, सभा लौट चलो । यह जानकर आओ कि स्वयं हारने के बाद मुझे दाँव पर लगाया अथवा मुझे हारने के बाद स्वयं हारे?''

प्रातिकामि जुए के कक्ष में लौटा । उसने द्रौपदी का संदेह धर्मराज को बताया । इस प्रश्न को सुनकर धर्मराज अति चिंतित हुआ और कुछ भी बोल नहीं सका ।

दुर्योधन ने प्रातिकामि से कहा ''जाओ और उससे कहो कि स्वयं वह सभा में आये और अपने संदेह की निवृत्ति करे ।

प्रातिकामि फिर से द्रौपदी के पास आया और कहा ''देवी, सभासदों का कहना है कि आप स्वयं वहाँ आयें और अपने संदेह को दूर करें ।''

''प्रातिकामि, उस सभा में मेरा आना उचित नहीं है । इससे कौरवों की कीर्ति को कलंक लगेगा । मेरे प्रश्न का समाधान सभासद दें । फिर वे जैसा करने को कहेंगे, करूँगी ।'' द्रौपदी ने कहा ।

प्रातिकामि ने लौटकर सभा को द्रौपदी की बातें दुहरायीं । सभा का कोई भी सदस्य कुछ कहने के लिए सन्नद्ध नहीं था, क्योंकि वे सब दुर्योधन से डरते थे । सबने सर झुका लिया और मौन रह गये । धर्मराज ने स्थिति भाँपी और द्रौपदी को ले आने के लिए प्रातिकामि के साथ एक दूत को भी भेजा । उस दूत ने धर्मराज का संदेश सुनाया तो द्रौपदी मासिक धर्म की दशा में भी प्रातिकामि के साथ सभा में गयी । धृतराष्ट्र के सम्मुख खड़ी हो गयी । पाँडव सिर झुकाये, विषाद-पूर्ण मुख लिये बैठे हुए थे । द्रौपदी को देखने का साहस उनमें नहीं था । अपने आप पर वे लज्जित थे ।

दुर्योधन ने पाँडवों की मनोस्थिति को भाँपा और गंभीर स्वर में प्रातिकामि को आज्ञा दी ''देखते क्या हो? उसे यहाँ ले आओ ।''

प्रातिकामि द्रौपदी को छूने से डर रहा

था। सभासदों को संबोधित करते हुए उसने पूछा "द्रौपदी से मैं क्या कहूँ?"

दुर्योधन जान गया कि वह भीम को देखकर ड़र रहा है। तब उसने दुश्शासन से कहा "दुश्शासन, उसे यहाँ खींचकर ले आओ। ये हमारे दास हैं, ये हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।"

दुश्शासन ने अपने आत्मगौरव को भी भुलाकर कहा, "द्रौपदी, इधर आओ। तुम्हारे पतियों ने तुम्हें हमारे सुपुर्द कर दिया है। क्यों शरमाती हो। हमारे दुर्योधन से प्रेम करो। कौरवों को अपना ही समझो" कहता हुआ वह द्रौपदी के पास आया।

अपने कांतिहीन मुख को अपने हाथों से छिपाती हुई वह गांधारी की तरफ़ बढ़ने लगी।

दुश्शासन ने उसका पीछा किया और कहा "मेरे चंगुल से छूटकर जा कहाँ पाओगी" कहते हुए उसने द्रौपदी के केश पकड़कर खींचा। पाँच महावीर पतियों के होते हुए भी अबला द्रौपदी भय से थर-थर काँपने लगी। उसने धीमे स्वर में कहा "अरे बुद्धिहीन, मैं अब मासिक-धर्म में हूँ। मुझे सभा के मध्य ले जाना अनुचित है।"

दुश्शासन ने कहा "तुम्हारे मासिक धर्म से मेरा कोई लेना-देना नहीं है। तुम वस्त्रहीन हो या नहीं, इससे भी मेरा कोई संबंध नहीं। तुम्हारे पति ने तुम्हें जुए में हारा है। तुम हमारी हो गयी। हमारी दासी हो। हमारी अन्य दासियों की तरह तुम भी एक दासी मात्र हो। यह भूल जाओ कि तुम महारानी हो। तुम्हारे पति अब राजा नहीं रहे। वे हमारे दास हैं। वे तुम्हारी सहायता करने की

सभा में उपस्थित सब धर्म के ज्ञाता हैं, किंतु क्यों मौन साधे बैठे हैं, तुम्हें ऐसा करने से क्यों रोक नहीं रहे हैं, मैं समझ नहीं पा रही हूँ। भरतकुल सड़ गया है। लगता है कि इस अन्याय को रोकने की शक्ति भीष्म, द्रोण, विदुर और धृतराष्ट्र में भी नहीं है।'' कहकर वह पाँडवों की तरफ़ तीखी दृष्टि से देखने लगी।

दुश्शासन ज़ोर से चिल्ला पड़ा ''अरी दासी।'' उसकी इस चिल्लाहट पर कर्ण, शकुनि, दुर्योधन ठठाकर हँस पड़े। शेष अपने आप दुखी होने लगे।

तब भीष्म ने द्रौपदी से कहा ''देवी, मानता हूँ कि धर्मराज ने जुए में तुम्हें हारकर ग़लती की। किन्तु धर्मराज अपना सब कुछ खो देने के लिए सिद्ध होगा, पर अपना धर्म नहीं छोड़ेगा। तुम्हें जुए में हारकर क्या वह तुम्हें धोखा देगा?''
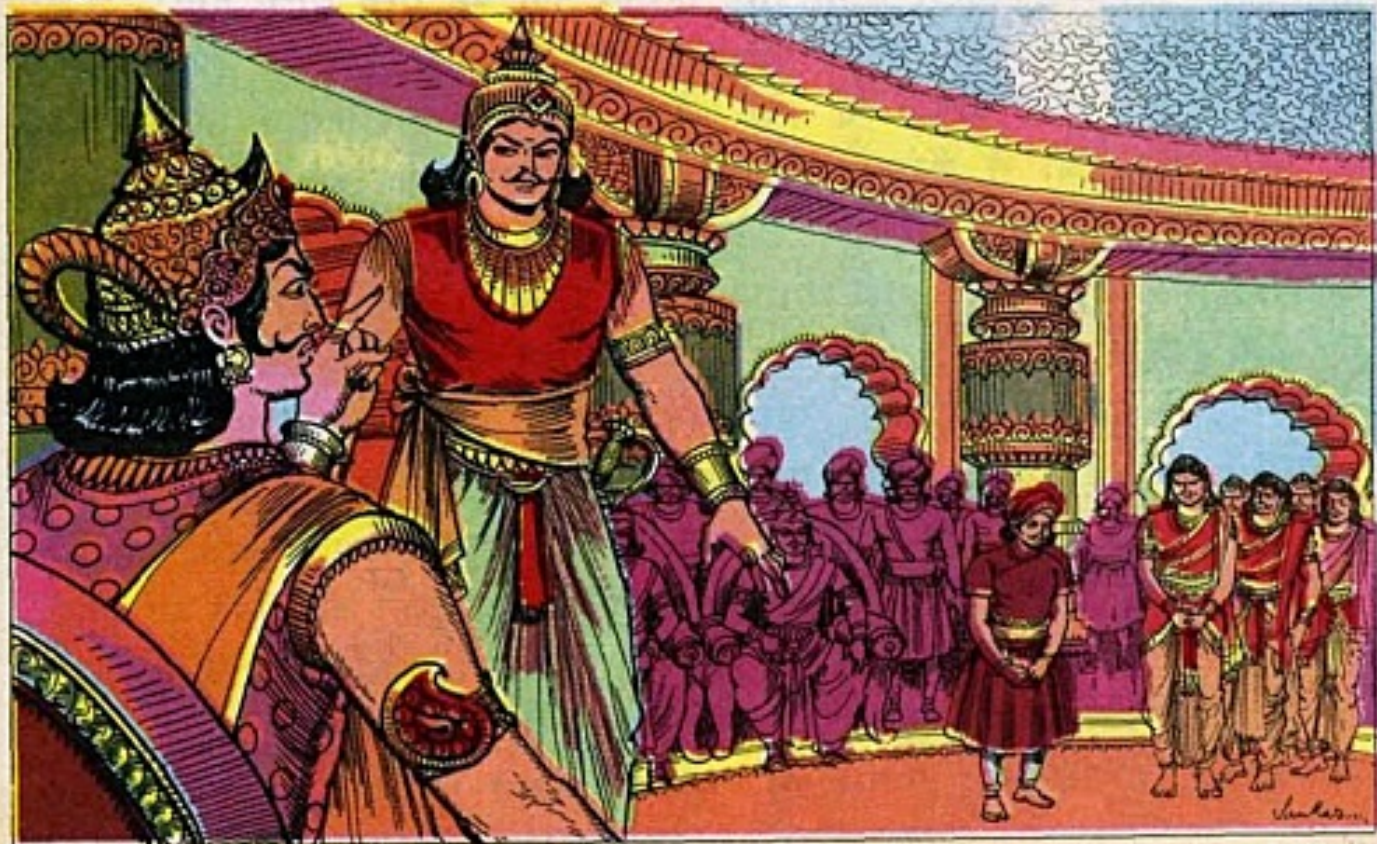
स्थिति में नहीं हैं। हम कौरव जो चाहेंगे, करेंगे, करके रहेंगे। हमें कोई रोक नहीं सकता। धर्म हमारे पक्ष में है। हमारे कहे अनुसार न चलना अधर्म होगा। जो भी हम कर अथवा कह रहे हैं, न्याय-संगत है।'' कहते हुए उसने द्रौपदी के केश पकड़ लिये और तेज़ी से खींचता हुआ उसे सभा-मध्य ले आया।

द्रौपदी के केश बिखर गये। साड़ी आधी फिसल गयी। क्रोध से उसकी आँखें लाल हो गयीं। उसने दुश्शासन से कहा ''अरे दुष्ट, पिता समान इन वृद्धों के सम्मुख मुझे इस स्थिति में खड़ा होना नहीं चाहिये। इस अपमानजनक स्थिति में मुझे खड़ा मत करो। इस पापमय कार्य के लिए तुम अवश्य ही दंड भुगतोगे। एक अबला का अपमान बड़ा ही घातक सिद्ध होगा। इस

द्रौपदी ने कहा ''अप्रिय जुए में भाग लेकर मेरे पति छले गये। उन्होंने सब कुछ खो दिया। कुछ और शेष नहीं था, क्या इसलिए उन्होंने मुझे दाँव पर लगाया? पुत्रों, पुत्रियों, बहुओं को नियमानुसार भरण-पोषण देनेवाले कौरव-वृद्ध इसपर प्रकाश डालें'' कहती हुई वह रो पड़ी। दुश्शासन तैश में आकर उसे तरह-तरह से बुलाते हुए उसका अपमान करने लगा।

यह सब कुछ देखते और सुनते हुए भीम से रहा नहीं गया। उसने धर्मराज से कहा ''जुआरी नीतिहीन पत्नियों को भी दाँव पर नहीं रखते। पवित्र द्रौपदी के साथ

आपने बड़ा अन्याय किया। समस्त ऐश्वर्यों को और हमें हारा, इसका मुझे कोई दुख नहीं। पाँचाली को दाँव पर लगानेवाले आपके हाथों को जला देना चाहिये। सहदेव, अग्नि लाना।''

अर्जुन ने भीम से कहा ''अब तक चुपचाप सब कुछ सहते रहे, पर अचानक अग्रज के मन को क्यों दुखा रहे हो। इन जुआरियों की तरह क्या तुम्हारी धर्म-बुद्धि भी भ्रष्ट हो गयी? धर्मराज ने जान-बूझकर जुआ नहीं खेला। वे आह्वानित हुए तो राजधर्म का पालन करने के लिए उन्हें जुआ खेलना पड़ा। इसमें उनकी कोई त्रुटि नहीं है। शांत हो जाओ।''

सभा में से किसी ने भी द्रौपदी के प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। तब धृतराष्ट्र के पुत्रों में से एक विकर्ण उठ खड़ा हुआ और बोला ''द्रौपदी के प्रश्न का उत्तर दीजिये। कुरुवृद्ध व गुरुवर क्यों मौन साधे बैठे हैं? राग-द्वेष व पक्षपात से मुक्त होकर अपने अभिप्राय बताइये। धर्म का विशदीकरण कीजिये।''

पर किसी ने भी कुछ नहीं कहा। तब उसने कहा ''आप लोग न्याय सुनाना नहीं चाहते तो न सही, मैं सुनाऊँगा न्याय। स्त्री, आखेट, जुआ, मदिरा, इन चारों का जो दास बन जाता है, वह धर्म का पालन करने में अशक्त होता है। धर्मराज ने जुए की लत के कारण अपने को, अपने भाइयों को तथा अंततः द्रौपदी को भी खो दिया। द्रौपदी केवल धर्मराज की ही नहीं बल्कि सब पाँडवों की संपत्ति है। इन्हें सभा में बलपूर्वक ले आना अवश्य ही त्रुटिपूर्ण है। यही मेरा धर्म-निर्णय है।''

कर्ण ने विकर्ण का विरोध करते हुए कहा ''इस सभा में धर्म के दिग्गज आसीन

हैं। जो धर्म वे जान नहीं पाये, तुम जैसा एक छोकरा जान गया? कितनी हास्यास्पद बात है। धर्मराज ने अपना सब कुछ खोया और साथ ही द्रौपदी को भी। इसी कारण पाँडव मौन हैं। तुमने कहा कि ऐसी द्रौपदी को सभा में ले आना अन्याय है, अक्रम है। किन्तु वह तो कुलटा है, क्योंकि वह पाँच पतियों की पत्नी है। ऐसी स्त्री के कपड़े भी उतार दिये जाएँ तो कोई पाप नहीं।'' ''दुश्शासन, इस अज्ञानी विकर्ण की बातों की परवाह न करो। इन पाँडवों व द्रौपदी के वस्त्र उतारो और ले आओ।'' आवेशपूरित हो कर्ण ने कहा।

कर्ण का यों कहते ही पाँडवों ने अपने दुपट्टे नीचे रख दिये। दुश्शासन, द्रौपदी के वस्त्र उतारने लगा। द्रौपदी ने कृष्ण का स्मरण किया, प्रार्थना करने लगी। कृष्ण वहाँ आया और बिना प्रत्यक्ष हुए द्रौपदी को वस्त्र प्रदान करता रहा।

दुश्शासन वस्त्र खींचता रहा, किन्तु द्रौपदी के शरीर पर वस्त्र बना रहा। दुश्शासन की खींची साड़ियाँ एक छोटे पर्वत की तरह जमा हो गयीं। दुश्शासन थक गया और अशक्त होकर नीचे गिर गया।

भीम ने क्रोधित हो, नीचे की अपनी ओंठ को काटते हुए, भूमि को अपने हाथों से मारते हुए उत्तेजना-भरे स्वर में कहा ''सब लोग ध्यान से सुनिये। यह दुष्ट दुश्शासन द्रौपदी के मानभंग पर तुल गया। उसे विवस्त्र बनाना चाहा। ऐसे इस पापी दुश्शासन को युद्ध में मार डालूँगा और उसकी छाती फाड़कर उसका रक्त पी जाऊँगा। यही मेरी प्रतिज्ञा है।''

तब विदुर उठ खड़ा हुआ और अपने हाथ ऊपर उठाते हुए कहा ''सभिको, द्रौपदी के प्रश्न का उत्तर न देना अधर्म है। यद्यपि यहाँ इतने लोग हैं, पर विकर्ण के सिवा किसी ने भी अपना अभिप्राय व्यक्त नहीं किया। दीनों के साथ न्याय न किया जाए तो बड़ा ही अन्याय होगा, पाप होगा। आप भी इस पाप के भागीदार बनेंगे। यह माना जायेगा कि इस पाप में आपका भी भाग है। आप लोगों का यह मौन आपके लिए शाप सिद्ध होगा।''

फिर भी किसी ने कुछ नहीं कहा। दुर्योधन ने द्रौपदी को संकेत से अपनी जाँघ दिखायी। मानों उससे यह कह रहा हो कि यहाँ आकर बैठ जाओ। भीम ने जब
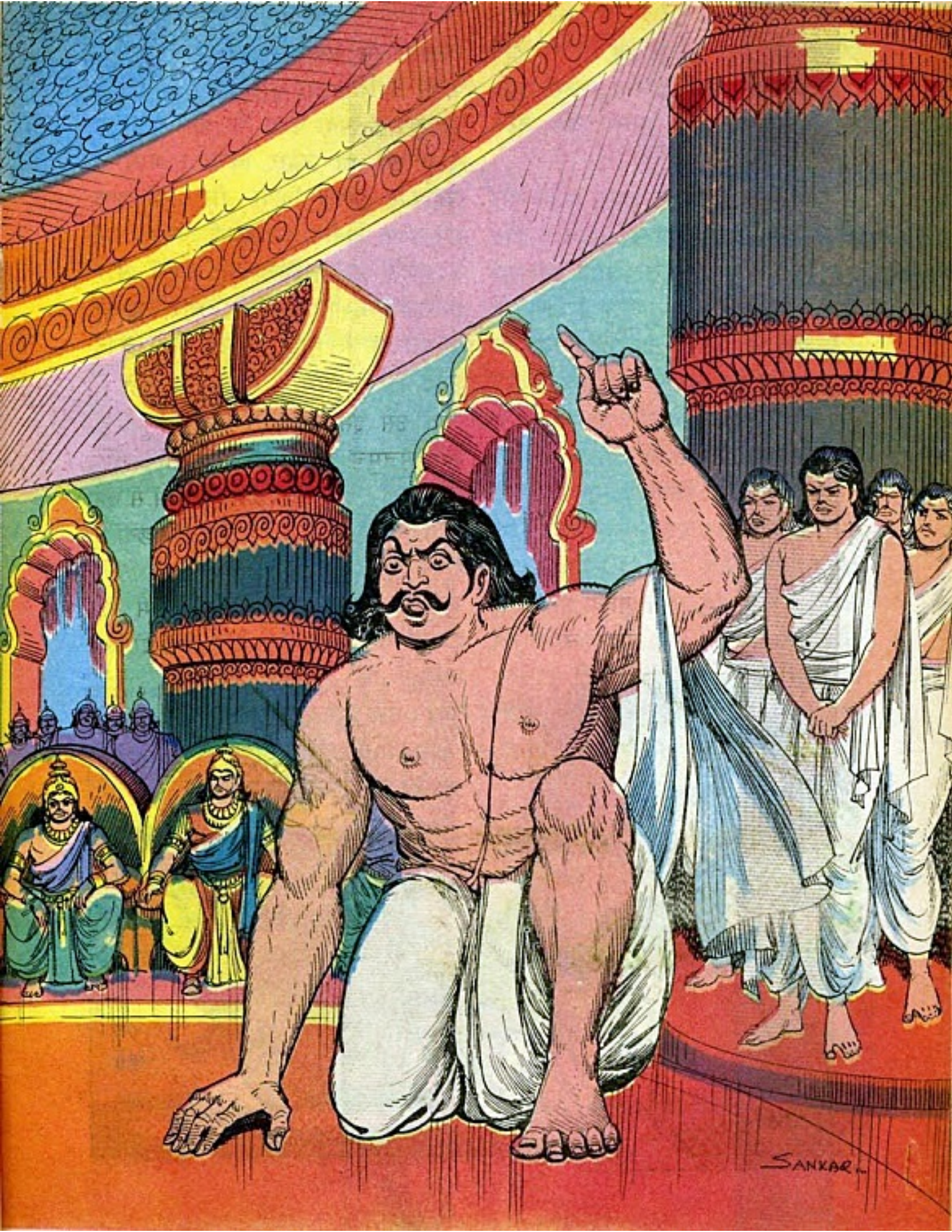
SANKAR

दुर्योधन की करतूत देखी तो उसने घोर प्रतिज्ञा की कि युद्ध में वह उसकी जाँघ अपनी गदा से तोड़ डालेगा। उस समय वह धधकती अग्निज्वाला की तरह दृष्टिगोचर हुआ।

दुर्योधन ने द्रौपदी से कहा "मुझसे कोई त्रुटि नहीं हुई। भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव अगर कह दें कि धर्मराज हमारे प्रभु नहीं है तो तो तुम्हें दास्य से मुक्ति मिलेगी।"

अर्जुन ने कहा "यह सत्य है कि धर्मराज हम सबके प्रभु हैं। जब वे स्वयं हार गये हैं तो अब कौरवों को बताना है कि वे किनके प्रभु हैं।"

उस समय वहाँ कितने ही उत्पात हुए। धृतराष्ट्र इससे डर गया और कहा "अरे दुष्ट दुर्योधन, पापी, क्यों बलपूर्वक द्रौपदी को सभा में ले आये। क्यों तुम पाँडवों से इतना जलते हो? यह तो अन्याय की पराकाष्ठा है।" यों उसने पुत्र को दुतकारा और द्रौपदी को पास बुलाकर कहा "देवी, मेरी बहुओं में से तुम्हीं उत्तम हो। कहो, तुम्हें क्या चाहिये।"

द्रौपदी ने चाहा कि पांडव दास्य से विमुक्त किये जाएँ और उनके हथियार उन्हें वापस दे दिये जाएँ।

कर्ण ने ताना कसा कि आज एक स्त्री ने पाँडवों का उद्धार किया। भीम ने रौद्राकार धारण किया और उसी क्षण शत्रुओं के विनाश की धमकी दी।

बहुत ही मुश्किल से अर्जुन और धर्मराज उसे शांत कर पाये। बाद धर्मराज ने धृतराष्ट्र से पूछा "हमारे लिए कोई आज्ञा।"

"पुत्र, तुम और तुम्हारे भाई निरातंक इंद्रप्रस्थ जाओ और अपना राज्य-भार संभालो। मैंने सोचा कि जुआ स्नेहपूर्ण वातावरण में होगा। हाँ, यह मेरी गलती है कि मैंने रोका नहीं। हम वृद्ध दंपतियों पर तरस खाकर हमारे पुत्रों से किये गये दुष्कर्मों को भुला दो। तुम्हें और तुम्हारे भ्राताओं का शुभ हो, कल्याण हो।" संवेदनशील धृतराष्ट्र ने कहा।

पाँडवों ने सबों से विदा ली और द्रौपदी को लेकर इंद्रप्रस्थ निकल पड़े।

कैथ

कैथ के फल हाथियों को बहुत पसंद हैं। वे इस पेड़ के फलों को अनायास ही मुँह में डाल लेते हैं और निगल जाते हैं। पर, पेट में जाने के बाद वे कैथ के फल के गूदे मात्र को खाते हैं और छिलके का विसर्जन करते हैं। इसीलिए इसे लाटिन भाषा में 'फेरोनिया एलिफांटम' कहते हैं। यह तो जानी हुई बात है कि विनायक चतुर्थी के दिन इसके फल नैवेद्य के रूप में विघ्नेश्वर के सम्मुख रखे जाते हैं। इसके ऊपर का खपड़ा सख्त होता है और अंदर पका गूदा मीठा। इसीलिए इसे अंग्रेज़ी में 'वुड यापिल' कहते हैं।

कैथ का गूदा ठंडक पहुँचाता है। इसलिए गर्मी के दिनों में इससे शरबत भी बनाते हैं। इस शरबत में शक्कर के बदले गुड मिलाया जाता है। कैथ का गूदा, शहद, मिश्री को मिलाकर स्वादिष्ट पकवान भी बनाये जाते हैं।

कैथ को संस्कृत में 'कपित्थ', हिन्दी में 'कैथ' के अलावा 'कविताही', या 'कावात', गुजराती में 'कोथा', मराठी में 'कवात', बंगाली में 'कथवेल' कन्नड में 'बेला', तमिल में 'विलांबलं', तेलुगु में 'वेलग' कहते हैं।

कैथ के पेड़ अधिकतर जंगलों में होते हैं। पर कहीं-कहीं घर के प्रांगण में भी देखे जाते हैं। सुदृढ़ लंबी शाखाओं वाले ये पेड़ साधारण ऊँचाई के होते हैं। टहनियाँ लच्छेदार होती हैं। रंग-रेशे के दोनों ओर पत्ते होते हैं। कोमल लाल रंग में छोटे-छोटे फूल गुच्छों में विकसित होते हैं। फल कोमल ऊदे रंग में होते हैं। ऊपर का छिलका खुरदरा होता है। ये ढाई अंगुल की माप में गेंद की तरह होते हैं।

हमारे देश के ऋषि :

कश्यप - अस्तीक

एक समय था, जब कि भूमि पर सर्प-भय अधिकाधिक था। तब के खेतों में, नदियों में, तालाबों में साँपों की संख्या बढ़ गयी। जंगलों में तो जहाँ कहीं भी देखो, साँप ही साँप थे। इस कारण भूमि पर मानव जाति का अस्तित्व डगमगा गया।

इस आपदा को जाना ऋषि कश्यप ने। वे ध्यान-मग्न हो गये और उन्होंने दैवबल से कुछ मंत्रों की रचना की। इन मंत्रों की महिमा से उन्होंने मनुष्य जाति को साँपों से बचाया। साँप के डसने से मरनेवाले मनुष्यों को बचाने के लिए उन्होंने विषवैद्य खोज निकाला। सबसे बढ़कर उन्होंने अपने तपोबल से सर्पों को वश में करने के लिए मानसा देवी नामक एक देवी की सृष्टि की।

मानसादेवी ने जरत्कार नामक एक ऋषि से अपना विवाह रचाया। उनका अस्तीक नामक एक पुत्र था। बचपन से विष्णु भक्त के रूप में उसने बड़ी ख्याति पायी।

परीक्षित राजा एक बार आखेट करने जंगल गया। समीक नामक एक मुनि आँखें बंद करके तपस्या कर रहा था। मरे हुए साँप को राजा ने उसके गले में डाल दिया। राजा की इस चर्या पर समीक का पुत्र बहुत ही क्रोधित हुआ। उसने शाप दिया कि इस दुष्कार्य को करनेवाला राजा सात दिनों के अंदर साँप के डसने से मर जायेगा। राजा ने अब अपने को इस शाप से बचाने के लिए ऐसी सुव्यवस्था की, जिससे साँप उसके पास न आ पाये। सातवें दिन राजा ने सूर्यास्त के समय खाने के लिए फल काटा। उस फल के अंदर कीड़े के रूप में था साँप। क्षण भर में उसने विराट रूप धारण किया और राजा परीक्षित को डस लिया। मुनि कुमार का शाप सफल हुआ। वह सर्प तक्षक नामक सर्पराज था।

तक्षक के कार्य पर क्रोधित परीक्षित के पुत्र जनमेजय ने सर्पों का सर्वनाश करने की प्रतिज्ञा की। उसने ऋषियों से परामर्श किया। उनकी सलाह के ही अनुसार उसने सर्पयाग शुरू किया। ऋषियों के तपोबल तथा शक्ति-भरे मंत्रों की महिमा के कारण हज़ारों की संख्या में साँप यज्ञकुंड में गिरे और अग्निज्वालाओं की आहुति बने।

इसे देखकर भयभीत तक्षक इंद्र के सिंहासन के नीचे छिप गया। ऋषियों के मंत्रों की महिमा के कारण देवेंद्र और उसपर आसीन उसका सिंहासन यज्ञकुंड की ओर आने लगा। तक्षक उस सिंहासन से चिपक गया।

उस समय अस्तीक जनमेजय से मिले। अपने विद्या-विवेक से उन्होंने राजा को प्रसन्न किया और सर्पयाग को रोक दिया। तक्षक भाग गया। बहुत-से सर्प मरने से बच गये।

अस्तीक ने सर्प जाति को नाश से बचा लिया, इसलिए कहा जाता है कि भक्तिपूर्वक उनका नाम लेते रहने से साँप से डरने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

क्या तुम जानते हो ?

१. भूतों का द्वीप (डेविल्स ऐलांड) कहाँ है?
२. भारत रेल्वे मार्ग की क्या लंबाई है?
३. हाल ही में केरल प्राँत में चुनाव हुए। क्या जानते हो वहाँ की विधान-सभा में कुल कितने स्थान हैं?
४. हमारे देश में वह कौन-सा राज्य है, जिसने अंग्रेज़ी को सरकारी भाषा के रूप में स्वीकार किया?
५. सलीम अली सुप्रसिद्ध पक्षी-शास्त्रज्ञ हैं। उनकेव्यक्तिगत जीवन से संबंधित पक्षी का क्या नाम है?
६. गणित शास्त्र के 'लोगारिथ्म्स' के रूपकार कौन हैं?
७. यानिमेशन चित्रपटों को बनाने के लिए हमारे देश में किन्होंने स्टूडियो की स्थापना की? वह कहाँ है? उनका प्रथम चित्रपट कौन-सा है?
८. संयुक्त राष्ट्र संघ के स्वर्णोत्सव पिछले वर्ष संपन्न हुए। उस सिलसिले में मलयालम में भाषण देने के लिए हमारे देश से कौन आह्वानित हुए?
९. संयुक्त राष्ट्र संघ में प्रवेश पानेवाला अंतिम देश कौन-सा है?
१०. हमारे देश से गयीं वे गायिका मात्र कौन हैं, जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ में संगीत का कार्यक्रम संपन्न किया?
११. संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकृत भाषाएँ कौन-सी हैं?
१२. भारत का राष्ट्रीय राज-मार्ग कौन-सा है, जिसके द्वारा पहले पहल दो नगर मिलाये गये?
१३. संसार की व्यापार-संस्था के डैरक्टर जनरल कौन हैं?
१४. वरल्ड क्रिकेट कप में पाकिस्तान ने बहुत ही कम रन लिये। स्कोर क्या है? किस देश के साथ उसका मुकाबला हुआ?
१५. क्रिकेट का वरल्ड कप क्रीडाएँ बाद कहाँ होंगी?

उत्तर

१. दक्षिण अमेरीका के ईशान में फ्रेंच गयाना है। उसके समीप ही स्थित एक द्वीप को भूतों का द्वीप कहते हैं।
२. ६२,००० कि.मी.
३. १४०
४. नागालांड
५. गौरिया
६. जान नेपियर
७. दादा साहब फाल्के अवार्ड के ग्राही डा. अक्किनेनि नागेश्वरराव
८. माता अमृतानंदमयी
९. पालान रिपब्लिक
१०. एम.एस. सुब्बलक्ष्मी
११. अरबिक, चैनीस, इंग्लीष, फ्रेंच, रष्यन, स्पानिश
१२. दिल्ली - चंडीघर
१३. रेनेटो रुगीरो
१४. ४०.२, ओवर्स में ७४ रन, १९९२ में जब इंग्लैण्ड में खेला।
१५. इंग्लैंड

सुवर्ण रेखाएँ - प्रश्नावली संख्या १ के उत्तर

१. स्काड्रन नेता राकेश शर्मा। १९८४ में अप्रैल ५ को दो और रूसी व्योमगामियों के साथ अंतरिक्ष की यात्रा की।

२. सवाय राजा जयसिंग ने जयपुर में, संसार के जिस बड़े सूर्य समय-यंत्र का निर्माण करवाया, उसे बृहत सम्राट यंत्र के नाम से पुकारते थे।

३. कुज, गुरु ग्रहों के बीच सेरेस नामक छोटा-सा उपग्रह (अस्टेरायड़) दिखायी देता है। जहाँ तक हम जानते हैं, यही बड़ा उपग्रह है। इसे खोजा गया १८०१, जनवरी पहली तारीख को।

४. पूरी का जगन्नाथ मंदिर। श्रीकृष्ण गोकुल से मथुरा आये। इसी की याद में हर साल बड़े ही वैभव के साथ उत्सव मनाया जाता है। इस अवसर पर मूर्तियों को बड़े-बड़े रथों में बिठाकर जुलूस निकालते हैं। हजारों भक्त गीत गाते हुए रथ खींचते हैं।

५. फरवरी २८, हर रोज ठीक १ मीटर के अनुसार २७ दिनों में २७ मीटर पार करता है। २८ वें दिन ऊपर आता है।

७. ए. महाराष्ट्र
बी. गोंडवन (मध्य प्रदेश)
सी. कूर्ग (कर्नाटक)
डि. नागालांड

रसोइयिन भूतनी

रानीगंज के रावत ने अपनी पुत्री सुनंदा का विवाह करने के लिए अपने दो एकड़ों का खेत पचास हज़ार रुपयों में बेच दिया।

सुनंदा को पिता का यह काम बिल्कुल पसंद नहीं था। उसने अपने पिता से कहा "पिताजी, इस धन के आधे हिस्से से एक घर खरीदिये। आपने अगर ऐसा नहीं किया तो मेरी शादी के बाद आपको अपना सर छिपाने के लिए कोई साया भी नहीं होगा। खेती की आमदनी तो गयी। अब हर महीने किराया चुकाना आपको बहुत भारी पड़ेगा। मैं नहीं चाहती कि मेरी शादी के लिए आप पूरा धन लुटा दें।"

बेटी की सलाह के अनुसार रावत ने एक घर खरीदा। इस घर का मालिक था आनंद। बचपन में ही उसका बाप गुज़र चुका था, इसलिये उसकी माँ ने अनेकों तक़लीफ़ें झेलकर उसे पाला-पोसा और बड़ा किया। बड़ा होने के बाद भी आनंद अपनी जिम्मेदारियों से दूर ही रहा और मटरगश्ती करता रहा। माँ की मृत्यु के बाद ही वह जान पाया कि पैसे कमाने के लिए कितने कष्टों का सामना करना पड़ता है, कितनी मेहनत करनी पड़ती है। उसे कोई नौकरी भी नहीं मिली। अब उसके सामने एक ही रास्ता था। घर बेचे और शहर जाकर कोई व्यापार करे। इस स्थिति में उसने सुनंदा के पिता रावत को पच्चीस हज़ार रुपयों में घर बेच दिया।

बाद रावत अपने नये घर में आ गया। सुनंदा और रावत ने सामान घर में सुव्यवस्थित रूप से सजाया। और यह काम पूरा होते-होते शाम हो गयी।

थकावट के कारण रसोई बनाने की भी शक्ति सुनंदा में नहीं थी, इसलिए उसने सोचा कि आज कोई देवी रसोई बना दे, तो कितना अच्छा होगा।

"आज ही क्यों, हर दिन मैं ही रसोई

राम कश्यप

बनाऊँगी । अब यह काम मुझ पर छोड दो" कहती हुई हाथ में चिमटा लिये एक भूतनी ने प्रवेश किया ।

भूतनी को देखते ही सुनंदा भय से चिल्ला पड़ी । भूतनी ने अपने हाथ का चिमटा हवा में यों घुमाया, मानों उसे आश्वासन दे रही हो कि ड़रने की कोई ज़रूरत नहीं । फिर कहा "ड़रो मत । मैं कोई और नहीं । इस घर को बेचनेवाले आनंद की माँ हूँ । वह तुम्हारे पिता के दिये पच्चीस हज़ारों से व्यापार करने की योजना बना रहा है । वह बड़ा ही अक़्लमंद है । मेरा तो विश्वास है कि इतना अक़्लमंद युवक आसपास के किसी भी गाँव में नहीं है । अब रही मेरी बात । जब जीवित थी, तब दो-तीन घरों में रसोई बनाती और अपनी जीविका चलाती थी । अब कम से कम किसी एक घर में ही सही, रसोई नहीं बनाऊँगी तो मुझसे रहा नहीं जायेगा । अपने ही घर में रसोई बनाऊँगी तो इससे बढ़कर मुझे और क्या चाहिये ।"

सुनंदा भय से काँपती रही । उसने बाहर जाकर अपने पिता से यह बात बतायी । रावत यह सुनकर घबरा गया और कहा "हम भी कितने अभागे ठहरे । आख़िर खरीदा भी तो भूतों का यह घर ।" अपने दुर्भाग्य को वह कोसता रहा ।

सुनंदा ने अपने पिता को समझाते हुए कहा "पिताजी, आप परेशान मत होइये । मुझे तो लगता है कि रसोइयिन भूतनी स्वभाव से अच्छी है । बातें करने का उसका ढंग भी मृदुल है । हमें ड़रने की कोई ज़रूरत नहीं ।"

रावत कुछ कहने ही वाला था कि इतने में रसोई-घर से भूतनी ने आवाज़ दी "खाना तैयार है । बाप-बेटी दोनों आ जाएँ ।" रावत और सुनंदा फूँक-फूँककर क़दम बढ़ाते हुए रसोई-घर में आये । खाना बहुत ही बढ़िया था । वे दोनों निर्णय नहीं कर पा रहे थे कि यह बात भूतनी को बतायें या नहीं कि इतने में भूतनी ने कहा "कल से तड़के ही आऊँगी और रसोई पकाकर जाऊँगी ।" कहकर वह ग़ायब हो गयी ।

यों रसोई के काम से सुनंदा को छुटकारा मिला । पर एक ही हफ़्ते के अंदर भूतनी की रसोई से वह विरक्त हो गयी । भूतनी हर दिन एक ही प्रकार के पकवान बनाती

थी। तेल का इस्तेमाल आवश्यकता से अधिक करती थी। तड़के ही बनायी गयी रसोई दुपहर तक ठंड़ी पड़ जाती थी। फिर अंधेरा छा जाने के बाद ही आती थी और रसोई बनाती थी। खाना खाते-खाते आधी रात हो जाती थी। रावत को जल्दी सो जाने की आदत थी, इसलिए वह भी भूतनी की रसोई से ऊब गया था।

एक दिन सबेरे-सबेरे जब भूतनी आयी तो सुनंदा ने उससे कहा "रसोई मैं खुद बना लूंगी। तुम्हारे बेटे के घर में रसोई बनानेवाला कोई नहीं है, इसलिए बेचारे को बहुत तकलीफ़ हो रही है। तुम वहीं जाकर अपने बेटे के लिए रसोई बना दो तो अच्छा होगा।"

"यह तो हो ही नहीं सकता। उसे मालूम हो जाए कि मैं भूतनी बन गयी हूँ, तो उसे दुख होगा। अब तो वह खूब कमा रहा है। ज़रूरत पड़ी तो एक क्यों, दो-तीन नलभीमों को रसोई बनाने रख सकता है।" भूतनी ने कहा।

सुनंदा ने मन ही मन सोचा कि यह इतनी आसानी से यहाँ से जानेवाली नहीं है। उसने संकोच-भरे स्वर में कहा "तुम्हारी रसोई हमें पसंद नहीं आती।" यह सुनते ही भूतनी ने कहा "कैसी बात कह दी तुमने? मेरी रसोई और पसंद न आये, ऐसा कभी हो सकता है? सुनो, मैं बड़ी सनकी हूँ। तुम बेटी-बाप चुपचाप मेरी बनायी रसोई खाओ। नहीं तो, अच्छा नहीं होगा।"

उस दिन से भूतनी क्रोधित हो रसोई में ज़्यादा से ज़्यादा मिर्च डालने लगी और तरकारियों को तेल में डुबोने लगी। इस वजह से महीने भर की सामग्री पंद्रह दिनों में ही ख़तम होने लगी। लाचार रावत को फिर से महीने के बीच ही में भोजन-सामग्री खरीदनी पड़ती थी।

एक दिन रात को जब बाप-बेटी खाना खा रहे थे, तब सुनंदा के बचपन की सहेली उसे देखने आयी। वह अब शहर में रहती है और किसी रिश्तेदार के घर होनेवाली शादी में शरीक होने आयी है।

इतनी रात गये उन्हें खाना खाते हुए देखकर उसने सुनंदा से पूछा "खाना खाने का यह भी कोई समय है?"

"भागवत कथा सुनने मंदिर गये थे। अभी-अभी लौटे। कुशल हो ना?" सुनंदा

ने पूछा ।

थोड़ी देर बाद दोनों सहेलियाँ पलंग पर बैठ गयीं और इधर-उधर की बातें करती रहीं । फिर सुनंदा ने अपनी सहेली को, घर खरीदने से लेकर भूतनी की रसोई बनाने तक की पूरी बातें बतायीं । और कहा ''इस रसोई की भूतनी का बेटा आनंद शहर में व्यापार कर रहा है और खूब कमा रहा है । भूतनी ने ही हमसे यह बताया । अपने बेटे के घर में जाकर वहीं रह जाती तो इससे हमारा पिंड छूट जाता ।'' कटुता-भरे स्वर में सुनंदा ने कहा ।

यह सुनकर सहेली राधा आश्चर्य में डूबती हुई बोली ''अरे, क्या कहती हो तुम? रसोई की यह भूतनी आनंद की माँ है? आनंद मेरे भाई का निकट मित्र है । अक़्सर वह हमारे घर आया-जाया करता है । व्यापार में दक्ष है । जैसे माँ को इस घर से लगाव है, उसी प्रकार बेटा भी इसे बहुत चाहता है । मेरे भाई से बार-बार इसका ज़िक्र करता है और कहता रहता है कि अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए मुझे वह घर बेचना पड़ा । इस बात पर दुख भी प्रकट करता रहता है कि पुरखों की इस निशानी को बेचते हुए उसे कितना सदमा पहुँचा ।''

सुनंदा ने आक्रोश-भरे स्वर में कहा ''बेचारे उस बड़े व्यापारी को मालूम नहीं कि इस घर को खरीदकर हम किन-किन मुसीबतों से गुज़र रहे हैं ।

राधा थोड़ी देर मौन रही और अचानक पलंग से नीचे उतरकर बोली ''वाह रे वाह, मुझे एक अच्छा उपाय सूझा सुनंदा । इस उपाय से तुम्हारे और आनंद के कष्ट दूर हो जाएँगे ।'' कहती हुई उसने सुनंदा के कान में कुछ कहा और बोली ''तुम्हें कोई एतराज न हो और सब तरह से तुम्हें ठीक लगे, तभी यह संपूर्ण होगा । यह बात भूतनी को मत बताना । अगर शुभ कार्य होगा तो शहर में ही संपन्न होगा ।''

सुनंदा शरमाती हुई बोली ''ठीक है, जैसा कहोगी, करूँगी ।'' दूसरे दिन रसोई की भूतनी के आने के पहले ही राधा शहर चली गयी । भूतनी के आते ही सुनंदा ने उससे कहा ''मुझे और मेरे पिता को शहर में ज़रूरी काम है । दुपहर को जा रहे हैं । कम से कम पंद्रह दिनों तक हमें वहीं रहना

होगा।'' चिढ़ती हुई भूतनी बोली ''इतनी छोटी-सी बात के लिए इतना लंबा भाषण क्यों? मतलब यह हुआ कि तुम लोग पंद्रह दिनों की छुट्टी माँग रहे हो। छुट्टी मंजूर है। छुट्टी के ख़तम होते ही नहीं लौटोगे तो घर का सर्वनाश कर दूँगी। समझे?''

उसी दिन दुपहर को सुनंदा और रावत शहर निकल पड़े। राधा और उसके भाई की निगरानी में आनंद और सुनंदा की शादी बिना किसी अड़चन के संपन्न हुई।

इसके एक हफ़्ते बाद सुनंदा अपने पति के साथ सबेरे-सबेरे घर आयी। उसने देखा कि भूतनी नारियल को पीसकर चटनी बना रही है। सुनंदा ने उसके पास आकर कहा ''सासजी, शहर जाने के बाद आपके बेटे को चटनियाँ अच्छी लग नहीं रही हैं। उनके लिए तली भिंडी बनाइये।'' भूतनी चकित होकर बोली ''तो तुम मेरे बेटे आनंद से शादी करने शहर गयी थी?''

''हाँ सासजी, आपका बेटा कुछ दिनों तक इसी घर में रहेगा। हर दिन स्वादिष्ट पकवान बनाइये। खीर भी बनाइयेगा। साबित कीजियेगा कि आप अव्वल दर्जे की रसोइयिन हैं। बहुत थक गयी हूँ। थोड़ी देर आराम कर लूँगी।'' जंभाई लेती हुई सुनंदा ने कहा।

भूतनी ने आँख लाल करते हुए कहा ''ठहरो बहू। अब जान गयी कि तुम कितनी चालाक हो। अपनी सास से काम करायेगी और खुद सो जायेगी? आराम करेगी? अगर कोई दूसरी होती तो मैं छोड़ती नहीं। ठीक है, मैं तेरी बात मान लेती हूँ। मेरा बेटा मुझे इस हालत में देखेगा तो बहुत दुखी होगा। उसके दिल को मैं चोट पहुँचाना नहीं चाहती। अब से यह रसोई तुम्हीं संभालो। मेरे बेटे की अच्छी तरह से देखभाल करना।'' कहकर वह गायब हो गयी।

सास के प्रति आदर-भाव था, इसलिए सुनंदा ने अपने पति आनंद से इसका ज़िक्र ही नहीं किया। अपने घर में वापस आने की वजह से आनंद बेहद खुश था। इस बात पर भी उसे खुशी थी कि गुणवती पत्नी मिली।

वानर की सहायता

एक शहर में एक ग़रीब औरत थी। उसका पति मर गया, परंतु अब भी लोग उसकी अच्छाई की प्रशंसा करते रहते हैं। अपने जीवन-काल में उसने सिर्फ़ नाम कमाया, धन नहीं। अपनी पत्नी व बेटे को दरिद्रता की दशा में छोड़कर वह परलोक चला गया। उसके बेटे का नाम था गोबर गणेश गोपाल।

पिता के मरते समय वह पंद्रह साल का था। वह जहाँ बैठता, बैठा ही रहता था। उठने की उसमें शक्ति नहीं थी। जंतु या मानव को निगलने के बाद अजगर जिस प्रकार सुस्त पड़ा रहता है, वैसे ही पड़ा रहता और सोता रहता था।

गोपाल की माँ कहती ''भगवान ने उसकी ऐसी सृष्टि की। हम क्या कर सकते हैं?'' वह बेटे को कभी भी गाली नहीं देती, काम नहीं सौंपती, उल्टे वही जगह-जगह पर काम करके थोड़ा-बहुत कमा लेती थी। उन पैसों से अपना और अपने बेटे का पेट भरती थी। माँ जब जगाती तब गोपाल मुश्किल से उठता और खाकर फिर सो जाता था।

गोपाल के घर के बग़ल में ही एक व्यापारी था। उसका नाम था अशर्फ़ी गुप्ता। गोपाल की माँ ने सुना कि व्यापार करने वह चीन जानेवाला है। तभी उसे उसका मासिक वेतन भी मयस्सर हुआ। उसमें से चाँदी की पाँच गिन्नियाँ गोपाल को देते हुए उसने कहा ''बेटे, इन्हें अशर्फ़ी गुप्ताजी को देना और कहना कि वे इस रक़म से चीन से कोई वस्तु खरीदकर लायें। उससे तुम कोई व्यापार करो और कमाओ।''

माँ की जिद पर कराहता, अपने आप बड़बड़ाता मुश्किल से गोपाल जागा। जम्हाई ली। माता से पाँच गिन्नियाँ लेकर नींद की खुमारी में चलते-चलते अशर्फ़ी

पच्चीस वर्ष पूर्व 'चन्दामामा' में प्रकाशित कहानी

गुप्ता के यहाँ गया और माँ की बातें दुहरायीं।

गोपाल को देखकर गुप्ता को उसपर दया आयी। सोचा, इन थोड़े पैसों से बेचारा व्यापार क्या करेगा, कैसे आगे बढ़ जायेगा, इन थोड़े-से पैसों में वस्तु भी क्या मिलेगी? स्वभाव से वह दयालू था, इसलिए उसने गोपाल से कहा "ऐसा ही करूँगा बेटे।" गोपाल घर लौटा और फिर सो गया। अशर्फ़ी गुप्ता ने बाकी व्यापारियों से बात की और निश्चित तारीख़ को अच्छे मुहूर्त पर चीन रवाना हो गये। भाग्यवश उनकी समुद्री यात्रा संतोषजनक रही। हवा भी अनुकूल चली। रास्ते में जहाँ-जहाँ बंदरगाहों पर वे रुके, वहाँ क्रय-विक्रय भी बड़े पैमाने पर हुए। आख़िर जहाज़ चीन पहुँचा। वहाँ व्यापारियों ने अपनी सारी चीजें बेच दीं और वहाँ से रेशमी साड़ियाँ, दंत सामान, रत्न आदि यथाशक्ति खरीदे। जहाज़ लौट पड़ा।

दस दिनों के बाद अशर्फ़ी गुप्ता को अकस्मात् गोपाल के दिये पाँच गिन्नियों की याद आयी। गोपाल ने कहा था कि उसकी माँ चाहती है कि इन पैसों से कोई वस्तु चीन से खरीदकर लावें। व्यापार की व्यस्तता में वह इस बात को भूल ही गया। फिर उसने सोचा कि अपनी खरीदी हुई वस्तुओं में से कोई वस्तु उसे दूँ, पर इतनी सस्ती कोई नहीं थी।

अशर्फ़ी गुप्ता ने बाक़ी व्यापारियों से कहा "जहाज़ को फिर से चीन ले जाएँगे। मैं एक चीज़ खरीदना भूल ही गया।" उनमें से किसी ने भी उसकी बात नहीं मानी।
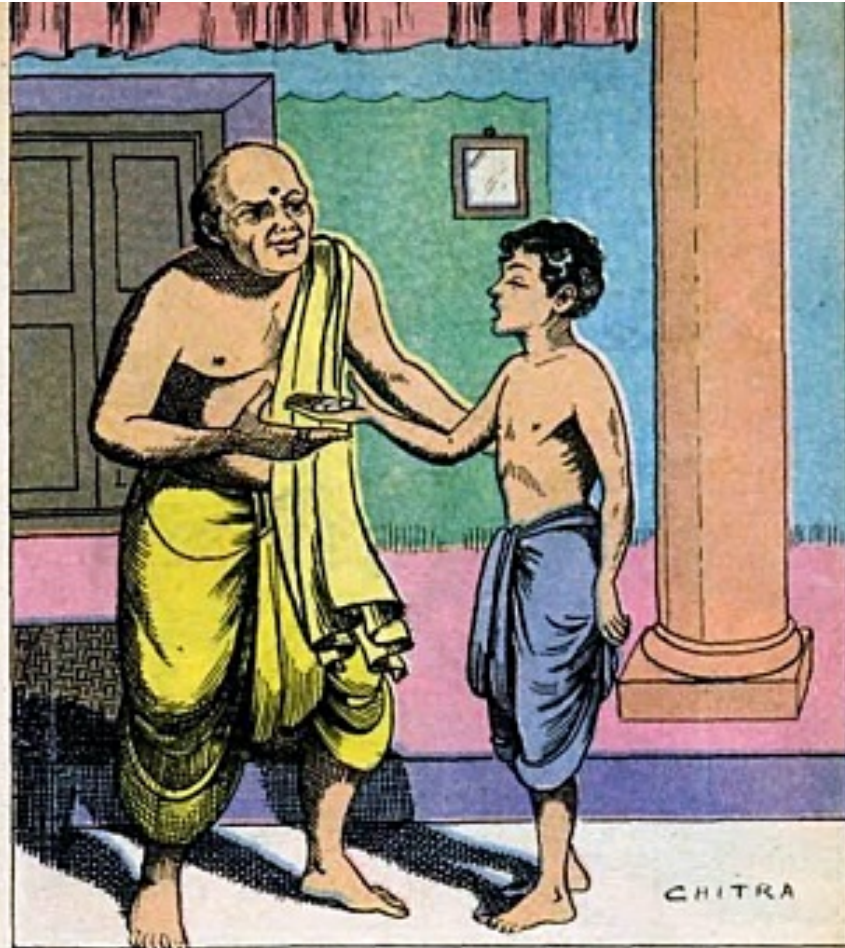
कुछ दिनों के बाद जहाज़ पूर्वी द्वीपों के एक बंदरगाह पर रुका। बहुत-से भिखारी बंदरगाह के पास आये। उनमें से एक के पास तीन बंदर थे। उनमें से दो बंदर बड़े ही फुर्तीले लग रहे थे। यजमान जो खेल खेलने का हुक्म देता था, खेलते थे। तीसरा बंदर बुड्ढा था। लगता था, वह कोई भी खेल जानता ही नहीं। बाक़ी दोनों बंदर जब अपना करतब दिखाते रहते थे, तब दीनता से वह समुद्र की ओर देखता रहता था।

उन बंदरों को देखते हुए अशर्फ़ी गुप्ता को कुछ सूझा। उसे लगा कि गोपाल के इन पैसों से एक बंदर खरीदकर ले जाऊँ

और उसे दे दूँ तो मेरा बोझ हल्का हो जायेगा, मेरी जिम्मेदारी पूरी हो जायेगी।''

''अरे सुनो, इनमें से एक बंदर बेचोगे? पाँच गिन्नियाँ दूँगा'' उसने पूछा मदारी से।

मदारी ने कहा ''इस बूढ़े बंदर को ले लीजिये।''

''जवान बंदर दो ना?'' गुप्ता ने पूछा।

''सौ गिन्नियों से कम दाम में नहीं दूँगा। ये ही मेरी जीविका के आधार हैं। इस बुड्ढे को मैंने पाँच गिन्नियाँ देकर खरीदा। बेकार खिलाता हूँ। यह तो कोई खेल ही नहीं जानता। सिखाऊँ भी तो सीखता नहीं। इसे खरीदिये न बाबूजी।''

लाचार होकर गुप्ता ने बुड्ढे बंदर को खरीदा और जहाज के अंदर आया। वह भी गोपाल की तरह सुस्त दिख रहा था। खाना खाने का समय छोड़कर बाकी समयों पर वह सोने के प्रयत्नों में ही लगा रहता था। ऊँघता रहता था। उसे बाँधने की भी ज़रूरत नहीं पड़ी।

थोड़े और दिनों के बाद जहाज़ मोती द्वीप पहुँचा। इस द्वीप के चारों ओर समुद्र में मोती के सीप मिलते हैं। इस द्वीप के मल्लाह उन व्यापारियों को सस्ते दामों में सीप बेचते हैं, जब उनका जहाज़ यहाँ रुकता है। कभी-कभी भाग्यवान व्यापारियों को बड़े-बड़े मोती मिलते हैं, जो काफ़ी मूल्यवान होते हैं। अभागों को तो उनकी चुकाई हुई रक़म भी नहीं मिलती।

यह जहाज़ इस द्वीप पर पहुँचा, मोतियों के सीपों के लिए ही। जहाज़ जैसे ही पहुँचा, युवक मल्लाह पानी में कूदे। तब तक चुपचाप बैठा बंदर, उन मल्लाहों की चिल्लाहटों को सुनकर जहाज से एकदम समुद्र में कूद पड़ा।

अशर्फ़ी गुप्ता को चिंता होने लगी कि यह बूढ़ा बंदर भी गोपाल के भाग्य में बदा नहीं है। परंतु, थोड़ी ही देर में वह बंदर मोतियों के दो सीपों को अपनी छाती से लगाये तैरता हुआ आया। जहाज़ के अंदर आया, उन्हें एक जगह पर रखा और फिर से समुद्र में कूद पड़ा। इस प्रकार मोतियों के सीपों को एक जगह पर सुरक्षित रखा।

बाकी व्यापारियों ने अपनी-अपनी इच्छा व शक्ति के अनुसार मोती के सीप खरीदे। किसी को भी एक-दो मोतियों से ज़्यादा नहीं मिले। मिले भी तो छोटे। कुछ

अभागों को तो एक भी मोती नहीं मिला। किन्तु बंदर के लाये सीपों में बड़े और छोटे मोती भी थे।

इसके पीछे एक सबल कारण है। यह बूढ़ा बंदर पहले इसी मोती के द्वीप में रहा करता था। इसका मालिक मल्लाह था। उसने इन मोतियों के सीपों को ले आना सिखलाया। कुछ समय बाद वह मर गया। बाद कुछ मछुआरों ने इसे पाला। उसे हमेशा झपकियाँ लेता हुआ पाकर किसी मदारी को सस्ते दाम में बेच दिया। उन्हें मालूम नहीं हो पाया कि बंदर सीपियों को ले आने की कला जानता है। वे यह भी जान नहीं पाये कि खेलता-कूदता बंदर अचानक क्यों सुस्त हो गया। जब उन्हें लगा कि यह किसी भी काम का नहीं है तो उससे पिंड छुडाने के लिए बस, बेच डाला। मदारी ने लंबे समय तक इसे अपने पास रखा, पर वह इसका मूल्य व उपयोग जान नहीं पाया। अब वह गोपाल की संपदा है। उसने अपने मालिक के लिए एक निधि का संग्रह किया।

अशर्फ़ी गुप्ता ने मोतियों को सावधानी से सुरक्षित रखा और शहर पहुँचते ही उन्हें गोपाल के सुपुर्द किया।

उन मोतियों को गोपाल ने एक महल बनवाया और बेचकर बड़ा धनवान बना। मोती द्वीप को देखकर जिस प्रकार बंदर का नशा टूट गया, उसी प्रकार, काम मिलते ही गोपाल की सुस्ती दुम दबाकर भाग गयी। साल में एक बार वह अपने बंदर को लेकर मोती द्वीप जाता और मोती के सीपों को ले आता। वह देखते-देखते थोड़े ही समय में लखपति बन गया। शादी करके आराम से ज़िन्दगी गुज़ारने लगा। अब वह जान गया कि माँ ने उसके लिए कितने कष्ट सहे। सब उसे सुस्त, निकम्मा और बेकार कहते रहते थे, पर माँ ने दूसरों की बातों पर ध्यान नहीं दिया और उसे पाला-पोसा। वह और उसकी पत्नी बड़े ही प्रेम से माँ की सेवा में लगे रहते थे।

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ, सितम्बर, १९९६ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

S.G. SESHAGIRI

S.G. SESHAGIRI

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ १० जुलाई, '९६ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००/- का पुरस्कार दिया जायेगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें।

चन्दामामा, चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६.

मई, १९९६, की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **मछली नहीं सोना मिला**

दूसरा फोटो : **केले नहीं जीना मिला**

प्रेषक : **वर्षा एस. बलसरे**

विजय टाकी स के पास, बरुड (पो.) पि - ४४४ १०६ (अमरावति जिला) (म.प्र)

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा : रु. ७२/-

चन्दा भेजने का पता :

डाल्टन एजन्सीज़, चन्दामामा बिल्डिंग्ज़, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

जीवन में हो उमंग, मधुरता के संग.

तुलसी रोपूँ अपने अंगना
इसकी वृद्धि कभी रुके ना

अंधे चाचा कंवर बेचारे,
माता-पिता सा मुझे दुलारें
मैं भी उनके साथ जाउंगी,
उनको सड़क पार कराउंगी.

अरे हाँ। डैडी को हो गया है फ्लू,
और मम्मी ने कहा है कि मैं उन्हें
दवा पिला दूं.

छुट्टी ले गंगूबाई की मौज
बर्तनों की जुटी है फौज
कहाँ से आई इतनी आफत
मेरी, राधा मौसी को मुसीबत

जब तक पेटू राजू आए
काजू बरफी मेरी चट कर जाए
उससे पहले स्मिता खाले
चाहे मुझे बिल्कुल न मिले.

टॉमी जब भी करता मस्ती
उसको चोट बहुत है लगती
डॉक्टर की दी दवा लगाऊँ
उसके जख्मों को सहलाऊँ

राजीव अंकल सुधारें कार
मेरी मदद उन्हें दरकार
मैंने उनका हाथ बटाया
मम्मी सोचें काम बढ़ाया

चंद्रा टीचर पढ़ातीं हिसाब
मैंने उनको दिए गुलाब
कितने, इसका नहीं हिसाब

मीठी-मीठी कामयाबी का रस... बरसों-बरस.

टीचर की मनपसंद

अप्सरा ब्यूटी पेंसिलें.